वृन्दावन की

फूलबंगला-कला

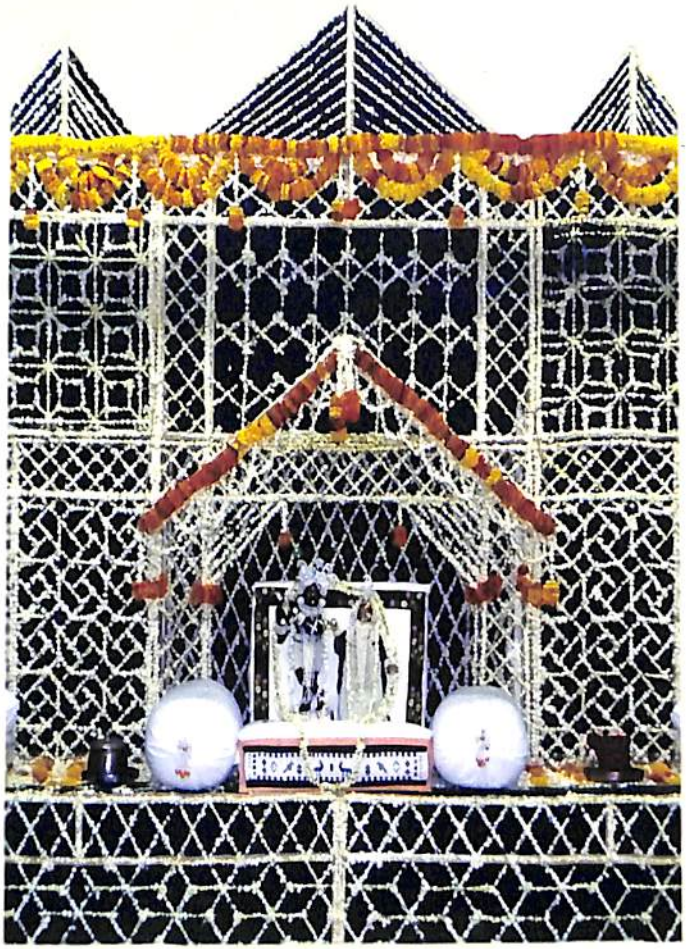

वृन्दावन शोध संस्थान

वृन्दावन
की
फूलबंगला-कला

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अनुदान से प्रकाशित)

प्राक्कथन

भवानीशंकर शुक्ल

अध्यक्ष

वृन्दावन शोध संस्थान

संपादक

डॉ. महेशनारायण शर्मा

निदेशक

वृन्दावन शोध संस्थान

संकलन एवं सह-संपादन

डॉ. राजेश कुमार शर्मा

वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन

प्रकाशक :

वृन्दावन शोध संस्थान

रमणरेती, वृन्दावन

Phone : 91-5652540628, 6450731 * Fax : 0565-2540576
Website : www.vrindavanresearchinstitute.org
Emil : vrindavanresearch@gmail.com

ISBN : 978-81-904946-3-2

सर्वाधिकार सुरक्षित

संस्करण - प्रथम

वर्ष 2011-12

मूल्य : 300/- (पेपर बैक)
325/- (सजिल्द)

मुद्रक : पुलकित क्रिएशन
कृष्णानगर, मथुरा
मो. 9045172022, 9719017687

प्राक्कथन

वृन्दावन सोइ रितु प्रगटावै। जोइ-जोइ दम्पति के मन भावै।।

(स्वामी दामोदर दास १६वीं शताब्दी)

सृष्टि के आदि काल से ही मानव समुदाय प्रकृति-पूजा करता आ रहा है। उसने प्रकृति के विविध रूपों की कल्पना कर उनके प्रति अपनी श्रद्धामयी भावना व्यक्त करने में आनंद का अनुभव किया है। पुष्प भगवान की प्रिय वस्तु है। प्राचीन वाणी साहित्य में वर्णित वृन्दावन और यहाँ के ऋतु चक्र का यह अनूठा सामंजस्य इस पावन धरा के सुखद वातावरण को दर्शित कराने वाला है। यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य की छटा अनुपम है। वेद, पुराण, श्रीमद्भागवत एवं प्राचीन वाणी साहित्य इसके प्राकृतिक सौन्दर्य का बोध कराते हैं। विक्रम की १५ वीं शताब्दी में हुई सांस्कृतिक चेतना का पल्लवन वृन्दावन की भूमि पर स्पष्टत: देखा जा सकता है। गोस्वामी हित हरिवंश, स्वामी श्रीहरिदास, संत प्रवर हरिराम व्यास, चैतन्य महाप्रभु एवं उनके अनुयायियों सहित अन्यान्य आचार्यों ने इसकी महत्ता को शीर्ष पर प्रतिष्ठित किया। वृन्दावन में संतों के आगमन की प्राचीन परंपरा रही है। यहाँ स्थायी रूप से निवास का भाव और श्यामा-श्याम की लीलाओं का गान परम सौभाग्य समझा जाता है। परिणामत: आज समस्त विश्व वृन्दावन के आकर्षण में बँधा है-

वृन्दावन कौ बसिवौ नीकौ।
जित-जित होइ चलत तित ही तित, दीसत है सब जीवन जी कौ।।
ठाँ ठाँ सन्त समाज विराजत, गावत हैं जस प्यारी-पी कौ।
मन के भाल विशाल दियौ है, सन्तत आनँद रस कौ टीकौ।।
इहि रस मगन भये तिनकौं सब, लागत वास अनत कौ फीकौ।
'दामोदर हित' आन रुचत कैसैं, पायौ है जिन स्वाद अमी कौ।।

यहाँ के आचार्य एवं संतों ने प्रकृति से सहज प्राप्त विविध पत्र-प्रसूनों को अपनी सेवा परंपरा का अंग बनाया। यहाँ निवास करते हुए संतों ने स्वेष्ट को नाना प्रकार के लाड़-लड़ाये। वृन्दावन में विद्यमान महान आचार्यों एवं सुदूर प्रांतों से आने वाले भक्त वृन्दों की निष्काम भक्ति से प्रभावित होकर यहाँ आने वाले संत समाज की लंबी श्रृंखलाएँ मिलती हैं, जिनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य भगवद् भक्ति था। भक्ति में रचे पगे ऐसे संत वृन्दों ने यहाँ साधना रत रहकर सर्वथा नवीन आध्यात्मिक ऊर्जा का जो संचार किया, जो लोगों को चमत्कृत करने वाला था। उनके इस प्रभाव स्वरूप यहाँ अनेक कला परंपराओं का उदय और वर्तमान में उसका परिष्कृत स्वरूप वृंदावन के देवालयों में आज भी सहजता से दर्शित है। आम जनमानस को चमत्कृत करने वाली यह कला परंपरायें जहाँ पूर्णतया भक्ति भाव से ओतप्रोत हैं; वहीं ये उन महापुरुषों के कला कौशल का भी बोध कराती हैं। सेवा भाव की इन परंपराओं से यहाँ समय-समय पर अनेक कलाओं का प्रादुर्भाव हुआ है। जिसके

अंतर्गत फूल बंगला, जल विहार, चंदन यात्रा, सावन के हिंडोले, रथ यात्रा एवं सांझी जैसे मनोरथों का आकर्षण देखते ही बनता है। मानवीय संवेदना के साथ पूजाराधन की यह कला परंपराएँ यहाँ ब्रज संस्कृति के वैशिष्ट्य का बोध कराती हैं। वृन्दावन की मनोहारी कला परंपराओं में फूलों के बंगले बनाना विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण कला है। ग्रीष्मकाल में विभिन्न प्रकार के पुष्पों द्वारा यहाँ बनने वाले भव्य एवं नव्य बंगले आमजन को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं। फूल बंगला कला वृन्दावन की प्राचीन एवं महत्वपूर्ण परंपराओं में से एक है। विक्रम की १६ वीं शताब्दी में फूल महल, कुसुम कुंज, फूल भवन एवं फूल बैठक जैसे सम्बोधनों से अलंकृत इस कला का चरमोत्कर्ष १७ वीं शताब्दी से स्पष्ट देखा जा सकता है। इस काल खण्ड में रचित वाणी साहित्य में जहाँ इस आयोजन हेतु '**बंगला**' शब्द का प्रयोग साफ तौर पर देखने को मिलता है; वहीं वर्तमान बंगला कला में प्रयुक्त विविध सामग्री विषयक अनेक महत्वपूर्ण जानकारियाँ भी तत्कालीन पदावलियों से उद्घाटित होती है; जो उस काल में बंगला कला के महत्व का भान कराने वाली है। वृन्दावन की यह अद्भुत कला परंपरा आज देवालयों से इतर विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों पर भी दर्शित होती है। इतिहास, कला एवं संस्कृति का एक मुख्य स्रोत वाचिक परंपरा भी है। लोक की वाचिक परंपराओं के यह महत्वपूर्ण तथ्य उक्त संदर्भ में विशेष जानकारियाँ उद्घाटित करते हैं। वृन्दावन की फूल बंगला कला पर प्रकाश डालती; सम्भवत: यह प्रथम ऐसी पुस्तक है जो वृन्दावन शोध संस्थान प्रकाशित कर रहा है। जिससे इस कला विषयक अनेक सूक्ष्म जानकारियां उद्घाटित होंगी। प्रस्तुत पुस्तक में डॉ. राजेश कुमार शर्मा ने वृन्दावन शोध संस्थान सहित स्थानीय निजी संग्रहों से प्राचीन महत्वपूर्ण पांडुलिपियों का अन्वेषण कर जहाँ इस कला के क्रमिक विकास का प्रामाणिक अध्ययन प्रस्तुत किया है; वहीं फूल बंगला कला के अंतर्गत वाचिक परंपरा में विद्यमान बंगला कला विषयक शब्दावली का संकलन कर विषय को और अधिक उपयोगी बना दिया है। परिश्रम पूर्वक किये गये इस कार्य के लिए डॉ. राजेश शर्मा सर्वथा बधाई के पात्र हैं। छायाकार उमाशंकर पुरोहित ने उत्कृष्ट फोटोग्राफी कर विषय का महत्व बढ़ाया है। अत: वे धन्यवाद के पात्र हैं। पुलकित क्रिएशन, मथुरा के श्री ओमप्रकाश अग्रवाल ने पुस्तक के मुद्रण में पूर्ण मनोयोग से कार्य कर विषय की उपयोगिता बढ़ायी है। वृन्दावन शोध संस्थान की प्रकाशन माला में "**वृन्दावन की फूल बंगला कला**" रूपी यह पुष्प ब्रज की कला-परंपराओं पर कार्य करने वाले शोधार्थियों एवं यहाँ आने वाले पर्यटकों का ज्ञानवर्द्धन करेगा, ऐसा विश्वास है।

भवानीशंकर शुक्ल

अध्यक्ष

वृन्दावन शोध संस्थान

संपादकीय

प्रत्येक स्थल की अपनी कुछ न कुछ विशेषता होती है, जो वहाँ की लोक संस्कृति का परिचायक होने के साथ ही वहाँ की भाषा, कला, रीति-रिवाज एवं संस्कार आदि का बोध कराती है। ब्रजक्षेत्रीय संस्कृति अति प्राचीन है जिसके मूल में राधा-कृष्ण की लीलाएँ मुख्य हैं। ब्रज के लोकाचार, कला, क्रीड़ाएँ, रहन-सहन, वस्त्राभूषण और यहाँ तक कि सामाजिक एवं देवालयी अनुष्ठान सभी अपने में अनूठे हैं। ब्रज क्षेत्र की देवालयी परम्पराएं पूर्व से ही समृद्ध रही हैं जिनसे पावन ब्रज की सौंधी सुगन्ध दर्शित होती है। यहाँ के देवालयों में परम्पराओं की विविधता देखते ही बनती है। आठ बार, नौ त्यौहार एवं नित्योसवैमंगलम् अर्थात् नित्य उत्सव एवं नित्य मंगल यहाँ की समृद्ध देवालयी परम्परा का भान कराने वाला है। कभी चन्दोत्सव तो कहीं चँदिया उत्सव, कहीं होली की मस्ती, कभी झूलों की मस्त बहार तो कभी हिमरितु में खिचड़ी उत्सव और कभी ग्रीष्म में यहाँ बनने वाले फूलों के बंगले। ब्रज संस्कृति का यह वैविध्य देशी-विदेशी श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करता है। श्रीकृष्ण की लीलास्थली के गौरव एवं ब्रज की वन्य हरीतिमा ने सदैव ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। वस्तुतः वृन्दावन भक्ति की भूमि है।

धन्यं वृन्दावनं तेन भक्ति नृत्यति यत्र च अर्थात वह वृन्दावन धन्य है जहाँ भक्ति भी नृत्य की मुद्रा में अवस्थित है। वृन्दावन में भक्ति का यह नर्तन यहाँ इसकी सर्वोच्च स्थिति को दर्शाने वाला है। प्रभु की उपासना में लगे भक्त रसिक महानुभावों की भक्ति के फलस्वरूप यहाँ अनेक कला परंपराएँ अस्तित्व में आईं, जिनका रसास्वादन जनमानस आज तक ले रहा है। वृन्दावन की वर्तमान **फूल बंगला कला** यहाँ इसी प्रकार भक्ति से उपजे सहज भाव का परिष्कृत स्वरूप है जो कालांतर में उत्तरोत्तर पुष्ट होती गई और जिसके विस्तृत विवरण प्राचीन पाण्डुलिपियों में उपलब्ध हैं।

वृन्दावन शोध संस्थान अपनी सर्वे एण्ड डॉक्यूमेंटेशन परियोजना के अंतर्गत ब्रज संस्कृति एवं यहां की कलाओं को प्रकाश में लाने के लिए एक प्रकाशन शृंखला पर कार्य कर रहा है। प्रस्तुत पुस्तक उसी की प्रथम कड़ी है। पुस्तक के विषय की परिकल्पना, संस्थान के अध्यक्ष श्री भवानीशंकर शुक्ल की देन है। मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

डॉ॰ राजेश कुमार शर्मा ने वृन्दावन की फूल बंगला परंपरा के विविध पक्षों पर सूक्ष्मता एवं शोधपरक दृष्टि से उपयोगी सामग्री का संकलन किया है। आवश्यक सूचना एवं सामग्री को उन्होंने वृन्दावन के विभिन्न स्थलों, देवालयों एवं समीपवर्ती ग्रामों से एकत्रित किया है। पुस्तक हेतु चित्रों का छायांकन उमाशंकर पुरोहित द्वारा किया गया है। फूल बंगला के संबंध में जिन महानुभावों से डॉ. राजेश शर्मा ने सहयोग प्राप्त किया उनमें श्री गिरधारीलाल शर्मा, रामपाल सिंह (दाऊ), श्रीकुंजबिहारी शर्मा, श्री शिवकुमार सिंह, श्री रघुनाथ भट्ट गोस्वामी पीठ (भट्ट जी) मंदिर के सेवायत श्री विभू भट्ट एवं श्रीजगन्नाथ जी का नाम साभार उल्लेखनीय है। पुस्तक के संपादन एवं प्रकाशन में डॉ. राजेश कुमार शर्मा के अतिरिक्त डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी का भी सराहनीय योगदान रहा है। आशा है यह पुस्तक शोधार्थियों एवं जिज्ञासु साधकों के लिए उपयोगी होगी।

डॉ॰ महेशनारायण शर्मा
निदेशक
वृन्दावन शोध संस्थान

वृन्दावन की फूलबंगला-कला

अनुक्रम

- प्राक्कथन .....(i-ii)
- संपादकीय .....(iii-iv)
- महत्त्व एवं उपयोगिता १
- पुष्पप्रेमी श्रीकृष्ण और वृन्दावन की प्राकृतिक सुषमा २
- वृन्दावन में फूलबंगलों की परम्परा एवं क्रमिक विकास ६
- ठाठ में कील का प्रयोग ८
- फूलबंगला के ठाठ (फ्रेम) ९
- विभिन्न प्रकार के ठाठ १०
- फूलबंगला की तैयारी १४
- फूलबंगला एक सामूहिक कार्य १६
- फूलबंगला में प्रयुक्त पत्र-पुष्प एवं सहायक सामग्री १८
- फूलबंगलों की विविधताएँ बदले परिवेश में बंगला कला २०
- बदले परिवेश में बंगला कला २१

परिशिष्ट

- फूलबंगला-कला विषयक चित्र २४
- फूलबंगला विषयक पदावली ३८
- कला-विशेषज्ञों से साक्षात्कार ४४
- फूल बंगला विशेषज्ञ सूची ४९
- फूलबंगला-कला शब्दावली ५०
- शब्दानुक्रमणिका ५४

वृन्दावन की फूलबंगला-कला

महत्त्व एवं उपयोगिता-

मानवीय संवेदनाओं के साथ पूजाराधन वृन्दावन की सेवा परम्परा का वैशिष्ट्य है। यहाँ जो नैसर्गिक छठा कभी लता-कुंजों के मध्य प्रभु की सेवा करते हुए दृष्टिगोचर होती थी, वही परिदृश्य आज मंदिर देवालयों में बनने वाले फूलबंगलों से प्रदर्शित होता है। वृन्दावन की कला परम्परा-श्रृंखला के अन्तर्गत यहाँ ग्रीष्म काल में प्रभु को गर्मी से बचाने एवं विविध पुष्पों के माध्यम से उन्हें सेवित किए जाने की परम्परा में **फूलबंगला** का आयोजन यहाँ की प्राचीन परम्परा है। विभिन्न देवालयों में नाना प्रकार के पुष्पों से सज्जित फूल-बंगला में जब सायंकाल श्री विग्रह विराजते हैं तो यह नयनाभिराम प्राकृतिक सुषमा मन को सहज ही विमोहित एवं आनन्दित कर देने वाली होती है।

लोकोत्सव परम्परा में पुष्पकला का यह विकसित स्वरूप यहाँ स्थानीय जनों में प्रकृति-प्रेम का भाव दर्शित कराने वाला है। वृन्दावन में फूल बंगला की यह परम्परा कब से शुरू हुई? फूलों से बनने वाले इन आकर्षक बंगलों का प्रारम्भिक स्वरूप क्या था? जैसे प्रश्नों के प्रामाणिक उत्तर तलाशे जाने आवश्यक हैं। जिससे यहाँ की इस अति महत्वपूर्ण कला का अध्ययन सुगमतापूर्वक हो सके। पूर्व में फूल बंगला कला पर अनेक लेख प्रकाशित हुए हैं। जिनमें बंगलों की विशेषता, फूलों के बंगलों में विराजमान प्रभु की मनोहारी झाँकी का वर्णन, एवं पदावलियों में वर्णित फूल-बंगला विषयक सौन्दर्य के रूप में यह कला सामने आई है लेकिन वृन्दावन की इस पुरातन फूल-बंगला कला के अनेक महत्वपूर्ण पक्ष आज तक अनुद्घाटित ही रहे हैं। यहाँ देवालयों में ग्रीष्मकाल में फूल-बंगलों का आयोजन सुधीभक्तजनों से जुड़ी सेवा-भाव की परम्परा रही है। कालांतर में यह परम्परा शनैः-शनैः रोजगारोन्मुखी हुई जिसके आज कई विशेषज्ञ नगर में विद्यमान हैं। जिनके निर्देशन में कलाकारों के समूह फूल-बंगलों को भव्यता प्रदान करते हैं। इन लोगों की अपनी शब्दावली है, जिसका प्रयोग करते हुए वे लोग फूल-बंगला बनाने की प्रक्रिया को चरणबद्ध रूप से सम्पन्न करते हैं। जहाँ आम जनमानस इस आयोजन को देख इसे 'फूल-बंगला' के नाम से सम्बोधित करता है वहीं इस कला के अन्तर्गत विशेषज्ञ चरणबद्ध रूप से स्वकार्य को सम्पादित करते हुए फूल-बंगला के फ्रेमों को **ठाठ**, श्रीविग्रह के सिंहासन के नीचे की ओर लगने वाले ठाठ (फ्रेम) को **बिछैया**, प्रभु के दोनों ओर बगल में प्रयुक्त ठाठ को **बगली** एवं इसी प्रकार अन्यान्य फ्रेमों को **पिछवाई, तिदरा, हथिनी, मार्का, छप्पर, बुर्जी, दरवज्जौ, ठाठ की पेशानी एवं**

गौख आदि नामों से संबोधित करते हैं। साथ ही इन फ्रेमों (ठाठ) पर कार्य करते हुए (फूल लगाते समय) **चसमारना** (फ्रेम पर जाल कसने के बाद खाली दिखने वाली जगह पर फूलों की लड़ी से बाँधना जिससे फ्रेम की लकड़ी न दिखे) **बटुआ लगाना** (फूलों की लड़ी की गोलाई में लगाना) **मढ़ाई**, विभिन्न प्रकार के जाल **अठमास, छःमास, वृन्दावनी, स्वस्तिक** (साँतियाँ) **चीप लगाना** (केले के तने को काटकर, छीलकर पतली चीपें निकाली जाती हैं), **गोलचा** (केले के तने को छीलकर गोल कटिंग करना) इस प्रकार विभिन्न क्रियाओं द्वारा फूल-बंगला के कार्य को चरणबद्ध रूप से पूर्ण किया जाता है।

यह फूलबंगला-कला का आकर्षण एवं लोकप्रियता ही है कि आज देवालयों की यह कला बाहर विविध रूपों में अनेक अवसरों पर देखी जा सकती है। श्रीमद्भागवत, रासलीला एवं इस्कॉन के आयोजनों में फूलबंगला कला के उपयोग के चलते यह कला अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर ख्याति अर्जित कर चुकी है। उक्त सन्दर्भ में अब तक कोई अभिलेखीकरण (डाक्यूमेन्टेशन) न होने से स्थानीय वाचिक परम्परा में विद्यमान यह महत्वपूर्ण जानकारियाँ बदलते परिवेश के प्रभाव स्वरूप समाप्ति की ओर अग्रसर हैं। उक्त विषयक कार्य से जहाँ फूलबंगला-कला के वाचिक परम्परा में विद्यमान यह तथ्य उदघाटित होंगे वहीं फूलबंगला-कला के उद्गम एवं क्रमिक विकास का अध्ययन कर शोधार्थी एवं जिज्ञासु साधक इस कला की चरणबद्ध विस्तृत जानकारी से साक्षात्कार कर लाभान्वित हो सकेंगे।

पुष्प प्रेमी श्रीकृष्ण और वृन्दावन की प्राकृतिक सुषमा—

फूलबंगला परंपरा में मुख्य आधार पुष्प है। विविध प्रकार के पुष्पों के संयोजन से भव्य एवं नव्य बंगले प्रतिदिन तैयार होते हैं। पुष्प प्रभु की अतिप्रिय वस्तु है। पुष्पांजलि परंपरा हो या दैनिक आराधन अथवा पूजन-अर्चन का कोई विशेष मनोरथ सभी में पुष्पों का विशिष्ट स्थान है। कन्नेर का पुष्प कर्ण पर धारण कर प्रभु के अद्भुत मनोहारी नृत्य का उल्लेख श्रीमद्भागवत में मिलता है—

वर्हापीडं नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारं,
विभ्रदवासः कनककपिशं वैजयन्तीं च मालाम् ।
रन्ध्रान्वेणोरधरसुधया पूरयन्गोपवृन्दै-
वृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद् गीति कीर्तिः।।[१]

१. श्रीमद्भागवत दशम अध्याय।

लता-गुल्म एवं पुष्पों की प्रचुरता आरंभ से ही वृन्दावन की मूल पहचान रही है। यहाँ सहज रूप से प्राप्त पत्र प्रसूनों का साधारण प्रयोग फूल बंगला कला की आरंभिक स्थिति को दर्शाने वाला है, जो कालांतर में विकसित परंपरा के रूप में दर्शित होती है। नाना प्रकार की लता-गुल्म, पुष्पों और वन्य हरीतिमा से आच्छादित वृन्दावन का वैभव भागवत, पुराण एवं वाणी साहित्य में दर्शित है। श्रीमद्भागवत के एक प्रसंग में वर्णन मिलता है कि गोकुल में कंस द्वारा भेजे गये राक्षसों के भय से नंदबाबा ने समस्त ब्रजवासियों को एकत्र करते हुए कहा कि अब हमें ब्रज में कहीं और सुरक्षित स्थल की ओर चलना चाहिये जो गोकुल की ही भाँति सुन्दर और हरियाली से परिपूर्ण हो। इस पर नंद के छोटे भाई घनानंद ने **वृन्दावन** की महत्ता का वर्णन करते हुए कहा ऐसे में भला वृन्दावन से उपयुक्त और कौन-सा स्थान हो सकता है-

वनं वृन्दावनं नाम पशव्यं नवकाननम्।
गोप गोपी गवां सेव्यं पुण्याद्रितृणवीरूधम्।। [१]

वृन्दावन में विभिन्न प्रकार के पुष्पों, लता-पताओं की प्रचुरता से यहाँ की यह कला परंपरा उत्तरोत्तर पुष्ट हुई। यहाँ की वन्य हरीतिमा के अनेक उदाहरण श्रीमद्भागवत, प्राचीन पाण्डुलिपियों एवं विभिन्न पुराणों में अनेक स्थलों पर सहजतापूर्वक दर्शित है-

वनं वृन्दावनं नाम नव पल्लव मण्डितम्।
कोकिल भ्रमरारावं मनोभव मनोहरम्।। [२]

(वृन्दावन नामक वन विभिन्न लता-पताओं एवं नव पल्लवों से सुशोभित है। जहाँ कोयल एवं भ्रमर आदि मधुर स्वरों से गान करते हैं। यहाँ का अद्भुत सौन्दर्य कामदेव के मन को भी मोहित करने वाला है।

वृन्दावन में स्थायी रूप से निवास करने वाले भगवान श्रीकृष्ण की पुष्प-प्रियता को देख बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी यहाँ लता-गुल्म एवं पुष्पों के रूप में ही यहाँ निवास की कामना लिए फिरते हैं -

आसामहो चरण रेणुजुषामहं स्याम्।
वृन्दावने किमपि गुल्मलतौषधीनाम्।।
या दुस्त्यजं स्वजनमार्यपथं च हित्वा।
भेजुर्मुकुन्दपदवीं श्रुतिभिर्विमृग्याम्।।[३]

---

१. श्रीमद्भागवत दशम स्कन्धे पूर्वार्धे वत्सवकवधो नामेकादशौऽध्यायः श्लोक -२८।
२. पद्मपुराण।
३. श्रीमद्भागवत दशम स्कन्ध।

(मैं वृन्दावन में गुल्म, लता-पताओं या औषधि का पौधा बन सकूँ और उन गोपियों की चरणधूलि में समर्पित हो सकूँ, जिन्होंने कठिनाई से छूटने वाले अपने सगे सम्बन्धियों और प्रतिष्ठा के पद को त्याग दिया और उन्होंने मुकुन्द माधव का वह स्थान प्राप्त कर लिया जिसका ज्ञान श्रुति-धर्म ग्रंथों के अध्ययन-मनन करने के उपरांत आता है)

प्राकृतिक छटा से ओत-प्रोत श्री वृन्दावन स्वाभाविक रूप से ही सुहावना है और सदा सर्वदा हरा-भरा बना रहता है-

सब रस कौ घर है सदा, श्रीवृन्दावनधाम।
जा मधि वैभव बसत नित, अधिपति स्यामा स्याम।। [१]

गौड़ीय सम्प्रदायाचार्य श्रीजीव गोस्वामी वृन्दावन की महत्ता का वर्णन करते हुए हरीतिमा से परिपूर्ण इस वन को प्रभु की स्थायी निवासस्थली बताते हैं-

"अस्ति किल कलित निखिल वृन्दावनं, वृन्दावन नाम वनं। यत्र ज्योतिश्चक्रमिव व्योम्नि, धर्म इव धर्मणि, तत्व निर्णय इव वेदे, सुखमिवाभीप्सित लाभे, रस, इव विभवादिवर्गे षडगुण्यमिवात्मनि, स्वयमिव स्वप्रेमणि, नारायण रव परम व्योम्नि, सर्वेषामाश्रयः स च कृष्णः सतृष्णज्जनानुभवनीयतया निजां निजाश्रयणीयतामुरी करोति।" [२]

(मनुष्य पशु-पक्षी आदि सभी प्रकार के वृन्दों की रक्षा करने वाला श्री वृन्दावन नामक वन है। यहाँ श्रीकृष्ण उसी प्रकार नित्य विराजमान हैं जैसे आकाश में नक्षत्र-मण्डल धार्मिक व्यक्ति में धर्म, वेद में तत्व, किसी वस्तु की प्राप्ति में सुख, विभाव-अनुभाव आदि संचारी भावों में रस, श्रीकृष्ण के षड्-ऐश्वर्य और बैकुण्ठ में नारायण।)

फूलबंगला-कला :

वृन्दावन में विभिन्न अवसरों पर विविध कलाओं का प्रदर्शन जन मानस को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर दिव्यानन्द की सुखद अनुभूति कराता है। यहाँ की मनोहारी कला परम्पराओं में फूलों के बंगले बनाना विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण कला है। ग्रीष्मकाल में ताप से बचाव हेतु विविध पुष्पों से सज्जित

---

१. महावाणी, सं० १०३।

२. श्रीजीव गोस्वामी विरचित उत्तर गोपाल चम्पू।

आकर्षक फूलों के बंगले में प्रभु को विराजमान कर सेवित किया जाता है। फूल बंगले को तैयार करने में जहाँ नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्पों का उपयोग किया जाता है, वहीं कभी-कभी केले के तने का उपयोग करते हुए विभिन्न फ्रेमों (ठाठ) के चयनित स्थानों में मढ़कर उन पर आकर्षक बेल-बूटे एवं विविध लीलाओं का अंकन किया जाता है। जिससे इन बंगलों की शोभा और अधिक बढ़ जाती है। बंगला का अर्थ है एक तला का मकान जिसकी छतें शिखरनुमा होती हैं।

फूल बंगले में भी ऊपर की ओर 'मार्का [१] लगाये जाते हैं। जिससे यह शिखरनुमा भवन की भाँति दर्शित होता है। फूलों से सजे सम्पूर्ण बंगले में मनमोहक जालियाँ और नक्काशीदार पाषाण जालियों की तरह ही इन पर अलंकृत विभिन्न प्रकार के जाल बरबस ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। फूल बंगले में श्री विग्रह के सिंहासन के दोनों ओर आयताकार फ्रेम (बगलियाँ), सिंहासन पर बाहर की ओर दरवज्जा तथा पीछे की ओर पिछवाई एवं दरवज्जा तथा पिछवाई के ऊपर बुर्जी लगाई जाती है, अगर फूल बंगला बुर्जीदार न बनाना हो तो श्री विग्रह के ऊपर फूलों की लड़ी से कसा छप्पर भी बनाया जाता है। दरबज्जे को जहाँ छज्जे लगाकर आकर्षक बनाया जाता है। वहीं पिछवाई पर कला-विशेषज्ञ अपना हुनर दिखाते हुए उत्कृष्ट जाल तोड़ते [२] हैं। दरवज्जा तथा पिछवाई के संतुलन हेतु दोनों तरफ से सिंहासन की चौड़ाई के अनुपात में उसे फ्रेमों द्वारा बाँधा जाता है। इस प्रकार बना यह चौखटा मजबूती पूर्वक टिका रहता है। फूलों से निर्मित इन भव्य बंगलों मे दोनों किनारों पर हथिनी [३] लगाई जाती है। हथिनी तथा सिंहासन के समीप लगने वाली बगली के मध्य भी उसी अनुपात की बगलियों का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार फ्रेमों को परस्पर बाँधते हुए इनके ऊपर भी ठाठ (फ्रेम) लगाये जाते हैं एवं छज्जे तथा मार्का आदि लगाकर बंगले को भव्यता प्रदान की जाती है। (देखें चित्र-1) यह फूल बंगले बहुमंजिला भी बनाए जाते हैं। वृन्दावन के **बांकेबिहारी, राधाबल्लभ, राधारमण, लालाबाबू, राधादामोदर, रंगजी, यशोदानन्दन , राधामोहन, राधिकाबल्लभ, गोदा-हरदेव, निधिवन, सेवाकुंज, गोविन्ददेव, राधासनेहबिहारी, गौड़ीय मठ,**

---

१. त्रिभुज जैसी आकृति का एक प्रकार का फ्रेम जो फूल बंगला में ऊपर की ओर लगाया जाता है।

२. कसे हुए जाल में से फूलों की डिजाइन बनाते हुए शेष फूल हटाने की प्रक्रिया ।

३. बंगला में दोनों किनारों पर लगने वाला एक प्रकार का समकोणनुमा फ्रेम जो धरातल पर खड़ा करने पर हाथी की सूँड़ की तरह दिखता है।

राधाश्यामसुन्दर, रघुनाथ भट्ट गोस्वामी पीठ (भट्ट जी), कालियमर्दन मंदिर आदि मंदिरों में इन बंगलों की छटा देखते ही बनती है। (चित्र पृ० ३४) भीषण गर्मी एवं सूर्य की तपिश को दिनभर झेलते हुए गर्मी से व्याकुल जनमानस जब सायंकाल फूल बंगला से सुसज्जित इन मंदिरों में प्रवेश करता है तो वह नाना प्रकार के पुष्पों की शीतल- सुगन्धित मन्द बयार के झोंकों से आनन्दित हो उठता है और उसके मन-मस्तिष्क में पुराणों तथा वाणी साहित्य में वर्णित 'वृन्दावन में नित्य बसन्त' की परिकल्पना मानो सहज ही साकार हो उठती है।

वृन्दावन में फूलबंगलों की परम्परा एवं क्रमिक विकास :

विक्रम की पन्द्रहवीं-सोहलवीं शताब्दी में वृन्दावन का वैभव पुन: परिलक्षित होने लगा था। चैतन्य महाप्रभु की यात्रा एवं हरित्रयी [१] सहित अन्यान्य महानुभाव के आगमन ने यहाँ सांस्कृतिक उत्कृष्टता का प्रादुर्भाव किया। मानवीय संवेदनाओं के साथ स्व इष्ट विग्रहों को लाड़-लड़ाते हुए उन्होंने लता कुंजों के मध्य उनकी नाना प्रकार से सेवाएँ कीं। आरम्भ में (ऊँची ठौर) पर विराजे श्री राधाबल्लभ लाल हों या निधिवन में ठा० बाँके बिहारी जी महाराज, तत्कालीन वन्य हरीतिमा और प्राकृतिक लता-द्रुम से सुसज्जित इन लता मंदिरों में ग्रीष्मकालीन सेवा के अन्तर्गत श्रीविग्रहों के सन्मुख नाना प्रकार के पत्र-प्रसूनों से सुसज्जित फूल बंगलों का विकसित स्वरूप आज की वर्तमान फूल बंगला कला के रूप में दर्शित होता है। यह फूलबंगला कला शनै:-शनै: विकसित हुई है। कई पडाव पार कर चुकी फूल बंगला कला हेतु कभी बॉस की खपच्चियों का प्रयोग होता, जिन पर फूलों की लड़ियाँ लपेटी जाती थीं। तो कभी लकड़ी के ठाठ (फ्रेमों) पर बंगले बनते और अब तो लकड़ी के फ्रेमों के साथ-साथ लोहे के फ्रेम भी कहीं-कहीं देखने को मिलते हैं।

वृन्दावन में फूल बंगला कला का अस्तित्व उतना ही पुरातन है जितना कि यहाँ हरित्रयी और समकालीन अन्यान्य महापुरुषों का आगमन। लता-कुंजों के मध्य श्री विग्रहों की सेवा और इन महापुरुषों के भक्तिभाव से प्रभावित तत्कालीन अनेक राजे-महाराजों, सेठ साहूकारों, जमींदारों एवं सामन्तों ने यहाँ अपार व्यय करते हुए घाट-अट्टालिकाओं एवं भव्य मंदिरों का निर्माण कराया जहाँ विभिन्न श्रीविग्रह स्थापित हुए। श्री विग्रहों के यहाँ आने पर इन मंदिरों में भी परम्परा का निर्वहन करते हुए ग्रीष्मकाल में फूल बंगलों का आयोजन बदस्तूर जारी रहा जो आज तक देखा जा सकता है। ग्रीष्मकाल में प्रभु को शीतलता प्रदान करने के

१. गो० हित हरिवंश, स्वामी श्री हरिदास तथा संत श्री हरिराम व्यास।

निमित्त आयोजित इस फूल बंगला कला का प्रारम्भिक स्वरूप जहाँ नैसर्गिक छठा के मध्य दृष्टिगोचर होता था वहीं इस कला के वर्तमान स्वरूप तक के सफर की सटीक जानकारी शोधपूर्ण विषय है। वृन्दावन में विद्यमान विभिन्न सम्प्रदायों के विस्तृत वाणी साहित्य का कालक्रमानुसार अवलोकन करने से यह तथ्य स्वत: ही उदघाटित होते हैं कि ग्रीष्मऋतु में प्रभु के समक्ष पुष्प सज्जा और लता पताओं के मध्य उनकी मनोहारी झाँकी विषयक १६ वीं शताब्दी के पदों में **फूल महल, कुसुमकुँज, फूल भवन, नवल महल एवं फूल बैठक जैसे संबोधनों**[१] **के** कुछ अंतराल बाद पदावलियों में फूल बंगला शब्द का प्रयोग स्पष्टत: देखा जा सकता है वहीं कुछ आगे चलने पर १७ वीं १८ वीं शताब्दी तक इस कला के विकसित स्वरूप की अन्यान्य जानकारियाँ भी प्राप्त होती हैं। इस प्रकार वृन्दावन की नैसर्गिक छटा के मध्य १५ वीं, १६ वीं शताब्दी में मिलने वाली बंगला विषयक जानकारी कालांतर में और अधिक पुष्ट होती जाती हैं। वर्तमान से लगभग ३००-३५० वर्ष पूर्व में रचित पदावलियों तथा प्राचीन पाण्डुलिपियों में बाकायदा फूल बंगला परम्परा, उनमें विभिन्न फूलों के जाल, छज्जे, लटकन आदि की विधिवत जानकारियाँ प्राप्त होती हैं।[२] राधाबल्लभ संप्रदाय के गोस्वामी ब्रजलाल जी के द्वारा सं० १७५५ में रचित एक ग्रन्थ **'सेवा सत' (सेवा विचार)** (अप्रकाशित पाण्डुलिपि) से मंदिर के मनोरथों की विविध जानकारियों के साथ फूल बंगला मनाये जाने का भी उल्लेख मिलता है। राधाबल्लभी भक्त श्री हित प्रेमदास जी[३] द्वारा रचित एक पद से वृन्दावन की फूल बंगला कला का विकसित स्वरूप दर्शित होता है। जिसमें बंगले में मोतिया[४] की जाली, गुलाब के फूल का प्रयोग[५], श्रीविग्रह के आगे 'द्वार' (दरवज्जा) का प्रयोग, छज्जा शब्द का प्रयोग एवं लटकन (झुबिया)[६] का वर्णन वर्तमान फूल बंगला कला का अनुभव कराने वाला है-

---

१. देखें पदावली।

२. देखें परिशिष्ट बंगला विषयक पदावली क्रम संख्या २,५,६,११ आदि।

३. राधाबल्लभ संप्रदाय के प्रख्यात वाणीकार जिन्होंने अपने वाणी साहित्य में फूल बंगला विषयक अनेक पदों की भी रचना की। हिन्दी भक्ति साहित्य के स्तम्भ चाचा वृन्दावन दास द्वारा जी द्वारा रचित **हरिकलाबेली** ग्रंथ जिसमें वृन्दावन में अफगान शासक अहमदशाह अब्दाली के इतिहास प्रसिद्ध हमले की जानकारी मिलती है। सन् १७५७ में वृन्दावन पर हुए इस हमले में घनानंद एवं कृष्णदास जैसे भक्तों के साथ ही **हित प्रेमदास** जी की मृत्यु की जानकारी भी मिलती है।

४. एक प्रकार का पुष्प जिसे स्थानीय लोग रायवेल भी कहते हैं। फूल बंगलों में अधिकांश इसी का प्रयोग होता है।

५. फूल बंगलों के दौरान आज भी बंगला विशेषज्ञ 'चस मारना' प्रक्रिया के अन्तर्गत गुलाब के फूलों की लड़ी का प्रयोग करते हैं।

६. झुबिया रायबेल, गैंदा तथा गुलाब के फूल को पिरोकर तैयार की जाती है जिसका उपयोग छज्जों पर लटकाने हेतु किया जाता है।

(सन् १७५७ ईसवीं से पूर्व रसिक संत प्रेमदास जी द्वारा रचित बंगला कला विषयक पद)

मोतिया की जाली में गुलाब ही के फूल खचे, बंगला में रचे सोनजुही के सु द्वार हैं।
कंज के कमल राजैं माधवी के छज्जा छाजैं, पीत चमेली के लटकन अति चारु हैं।।
फूल के सिंहासन पै फूल रहे स्यामा-स्याम, फूलन के अभिराम सोभित सिंगार हैं।
प्रेमदास हित वारी फूली अति फुलवारी, कुंज केलि फूली भारी फूलैं रतिमार हैं।।

हालाँकि वर्तमान फूल बंगला कला इससे भी कहीं अधिक आगे निकली प्रतीत होती है। स्थानीय उस्ताद लोगों ने इसे पीढ़ी दर पीढ़ी अत्यधिक सूक्ष्मता से सजाया सँवारा है। जिसका विवरण इन प्राचीन ग्रंथों में दर्शित नहीं होता। आज फूल बंगला कला के परम्परागत उस्तादों, कलाकारों ने इसमें बनने वाले जालों को लेकर अठमास, छःमास, वृन्दावनी, स्वस्तिक आदि अन्यान्य विधियाँ विकसित की हैं।[१] साथ ही केले के तने का बेहतरीन प्रयोग करते हुए ये लोग उसके अन्दरूनी हिस्से (पट्ठे छीलकर)[२] की कटिंग करते हुए बेहतरीन फूल पत्तियाँ, विविध अलंकारिक बेलें, नृत्य करता हुआ मयूर एवं विविध लीलाओं के दृश्य तैयार करते हैं।

ठाठ में कील (चोबों) का प्रयोग -

ठाठ में सर्वाधिक महत्वपूर्ण काम कीलें (चोबा) लगाना होता है। **(देखें चित्र-२)** सही मायनों में छोटी कीलों (बिरंजी)[३] पर ही फूल बंगला का सम्पूर्ण सौन्दर्य निर्भर करता है। ठाठ पर लगी इन कीलों को अगर फूल बंगला कला की **'धुरी'** से संज्ञित किया जाये तो अतिशयोक्ति न होगी क्योंकि इनकी माप-तौल में जरा सी भी चूक पूरे बंगले को प्रभावित करती है। फ्रेम के तैयार हो जाने पर उस्ताद लोग कुशल विशेषज्ञों से निश्चित दूरी लगभग ४ से ५ इंच पर इन छोटी कीलों को फ्रेम पर इस प्रकार ठुकवाते हैं कि आधी कील फ्रेम के ऊपर ही दिखती रहे। ऊपर दिखने वाले हिस्से पर ही कलाकार फूलों का जाल बनाते हैं। अगर ये कीलें सावधानीपूर्वक निर्धारित स्थान पर न लगी हो तो फूल बंगला हेतु जाल को तैयार करना मुश्किल हो जाता है और ऐसे में **'जाल तोड़ना'**[४]

---

१. देखें पृष्ठ २१ **फूल बंगला एक सामूहिक कार्य** के अन्तर्गत जाल तोडने वाले कारीगर एवं परिशिष्ट बंगला पदावली सं० ६।
२. केले के तने को फ्रेम के अनुसार काटकर उसका छिलका उतारने की प्रक्रिया। देखें पृष्ठ २० **फूल बंगला एक सामूहिक कार्य** के अन्तर्गत कटिंग करने वाले कारीगर।
३. एक प्रकार की छोटी काले रंग की कील जिसे स्थानीय लोग बिरंजी कहते है।
४. निर्धारित स्थान पर फूलों की लड़ी से चोबों पर जाल कसने के बाद उसे डिजायन देने की प्रक्रिया।

प्रक्रिया की गुंजाइश ही नहीं रहती। इस प्रकार इन छोटी कीलों को लगाने में थोड़ी सी असावधानी भी पूरे बंगले के कार्य को प्रभावित करती है।

फ्रेम में कील ठोंकने वाला कलाकार इस बात का ध्यान रखता है कि निश्चित दूरी पर लगाई जाने वाली कीलें फ्रेम के एक किनारे से शुरू होकर आखिर तक उसी निश्चित दूरी पर लगे। इस प्रकार वह अपना कार्य करते हुए सतर्कतापूर्वक इस बात की जाँच भली प्रकार करता है कि उसके द्वारा निर्धारित दूरी पर कीलों के लगाने का क्रम क्या समाप्ति तक उसी निश्चित दूरी के अनुपात में है? इस संदर्भ में एक कुशल विशेषज्ञ ने बताया कि हम अपना कार्य करते समय लगातार इस बात का ध्यान रखते हैं कि आखिरी कील तक यह क्रम न बिगड़े चूँकि कभी-कभी फ्रेमों की लंबाई-चौड़ाई की समस्या एवं फ्रेम तैयार करने वाले कारीगर की कमियाँ भी हमारे लिये एक समस्या होती है। इसलिये हम इस बात को ध्यान में रखकर बीच-बीच में इसकी जाँच करते हुए तथा जरूरत पड़ने पर इस क्रम में थोड़ा बहुत अंतर लाकर सुधार करते हैं। जिससे आखिरी कील तक यह क्रम उसी निश्चित अनुपात में बना रहे।

फूलबंगला के फ्रेम (ठाठ) :

फूलों से सज्जित ठाठ (फ्रेमों) का व्यवस्थित समुच्चय फूल बंगला कहलाता है। बंगला बनाने वाले उस्ताद एवं कलाकार ढेर सारे फ्रेमों एवं एक फ्रेम के लिये भी 'ठाठ' शब्द का ही प्रयोग करते हैं। फूल बंगला कला की यह विशेषता है कि बंगले के मध्य भाग से दोनों ओर के फ्रेम ऊँचाई, लम्बाई एवं चौड़ाई में समान होते हैं। फूल बंगलों के आयोजन हेतु जहाँ पूर्व में बाँस की खपच्चियों का प्रयोग होता था, वहीं अब प्राय: उपयोग में आने वाले लकड़ी फ्रेमों के अलावा कहीं-कहीं लोहे के फ्रेम भी मिलते हैं। एक आकर्षक फूल बंगले के निर्माण में 'ठाठ' की महती भूमिका होती है। इसी कारण से उस्ताद लोग अपने ठाठ (फ्रेम) अपनी निगरानी में ही सावधानी पूर्वक कुशल कारीगरों से तैयार कराते हैं। अच्छे ठाठ की यह विशेषता है कि वह बंगले के मध्य भाग से दोनों ओर समान अनुपात में होता है। जिससे वह सामने से देखने पर एक समान दिखे।[१] साथ ही ठाठ तैयार कराते समय उसके आधार तल की ऊँचाई का भी पूरा ध्यान रखा जाता है। ताकि उसकी ऊपरी मंजिल पर **'ठाठ बैठाने'**[२] में

---

१. फूल बंगला में श्रीविग्रह के सिंहासन की दोनों तरफ एक ही तरह के ठाठ (फ्रेम) का उपयोग होता है। जिससे फूल बंगले में समानता दर्शित होती है।

२. फूल बंगला बनाने में एक प्रकार की प्रक्रिया जिसके अंतर्गत आधार तल के ऊपर विभिन्न फ्रेमों के द्वारा ऊपर की मंजिल खड़ी की जाती है।

सुगमता रहे। प्रत्येक मंदिर का ठाठ उसके जगमोहन या तिवारी जहाँ बंगले के दौरान श्रीविग्रह को विराजित किया जाता है, के अनुपात में होता है। फूल बंगला कला में विभिन्न स्थानों में प्रयुक्त ये ठाठ (फ्रेम) कई प्रकार के होते हैं। जिन्हें अलग-अलग निम्नानुसार सम्बोधित किया जाता है-

१. दरवज्जौ	२. पिछवाई	३. बगली	४. हथिनी
५. तिदरा	६. मार्का	७. छज्जे	८. बिछैया
९. बुर्जी	१०. गौख	११. झाड़।	

विभिन्न प्रकार के ठाठ :

दरवज्जौ

यह फूल बंगले के मध्य भाग में आगे की ओर लगाये जाना वाला महत्वपूर्ण ठाठ (फ्रेम) है। देवालयों में बनने वाले फूल बंगलों में जहाँ श्रीविग्रहों को विराजित करते हैं, उनके आगे इस ठाठ का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक देवालय में बनने वाले फूल बंगले के दरवज्जे का आकार वहाँ के श्रीविग्रह के सिंहासन की माप-तौल के हिसाब से निश्चित किया जाता है। अगर बंगले में बुर्जी या छप्पर लगाना हो तो इस ठाठ का उपयोग नहीं होता। (देखें चित्र-३) में प्रदर्शित दरवज्जा ऐसे आकार-प्रकार का होता है कि जहाँ उस पर फूल एवं केले का कार्य एक साथ हो सके वहीं केवल फूलों की लड़ियों द्वारा भी उसे सजाया जा सके। दरवज्जे में ऊपर का हिस्सा जो पेशानी (देखें चित्र) कहलाता है तथा दोनों किनारों पर चौड़ा बॉर्डर जो निश्चित चौड़ाई का बना रहता है, विद्यमान होता है। इस पर चारों तरफ छोटी कीलें लगी रहती हैं; जिन पर केले के तने अथवा फूल की लड़ियों से सजावट की जाती है।

पिछवाई

मंदिरों में सजने वाले फूल बंगलों में पिछवाई का महत्वपूर्ण स्थान है। इस ठाठ को तैयार करने में उस्ताद अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। चूँकि फूल-बंगला में विराजित श्रीविग्रह के दर्शन करते समय भक्तजनों की दृष्टि सीधे प्रभु की ओर होती है ऐसे में उनके पीछे लगी पिछवाई की ओर ध्यान जाना स्वाभाविक है। इसलिए फूल बंगला तैयार करते समय इसे उस्ताद लोग स्वयं

१. राधाबल्लभ सम्प्रदाय भक्त कवि चाचा हित वृन्दावन दास कृत पदावली विद्यमान संवत् (१७५०-१८५४) संपूर्ण पद परिशिष्ट में उल्लिखित है।

तैयार करते हैं या अपने किसी हुनरमंद विशेषज्ञ को निर्देशित करते हुए इस पर कार्य करवाते हैं। पिछवाई में बेहतरीन जालों का प्रदर्शन देखते बनता है। **(देखें चित्र-४)** फूलों के सिंहासन (दरवज्जे) के पीछे प्रयुक्त इस ठाठ का प्रयोग परंपरागत वाणी साहित्य में स्पष्टत: दर्शित होता है। तत्कालीन समय में भले ही यह फ्रेम आज की पिछवाई की तरह विकसित न हो तथापि पुष्पों से सज्जित पिछवाई के संदर्भ में पर्याप्त जानकारी प्राचीन पाण्डुलिपियों से उद्घाटित होती है-

... फूलों का बिछौना जहाँ-तहाँ छबि छाई।
फूल के सिंहासन राजै फूल पिछवाई।।...

(चाचा वृन्दावनदास कृत)

बगली

ब्रज क्षेत्र की मल्ल विद्या परम्परा में कुश्ती के दौरान जहाँ बिल्कुल बगल (समीप) से लगाया गया एक दाव बगली कहलाता है, वहीं फूल बंगला कला में भी प्रभु के बगल में प्रयुक्त यह ठाठ **बगली** से ही संज्ञित है। आयताकार रूप में बने इस ठाठ में ऊपर की ओर पेशानी (देखें चित्र) तथा दोनों किनारों पर फूल लगाने एवं केले की मँढ़ाई हेतु बॉर्डर बना रहता है। **(देखें चित्र-५)** फूल बंगले में बगली का प्रयोग नीचे एवं ऊपर तथा दोनों तरफ होता है। फूलों से सज्जित भवन (फूल बंगला) में यह बगलियां किसी महल के झरोखों की भाँति दर्शित होती हैं। फूल बंगला में दोनों ओर समान रूप से इनका प्रयोग किया जाता है।

हथिनी

देखने पर प्रथम दृष्ट्या हाथी की सूँड़ का आभास होने के कारण ही इस ठाठ का नाम संभवत: हथिनी प्रचलित हुआ होगा। फूल बंगला तैयार करते समय हथिनी का प्रयोग बिल्कुल आखिर में दोनों तरफ किया जाता है। पूर्व में आयोजित फूल बंगलों में इसका बखूबी प्रयोग होता था लेकिन अब यह पहले की अपेक्षा कम ही देखा जा सकता है। ऊपर की ओर समकोण त्रिभुज (नब्बे अंश के कोण का त्रिभुज) तथा नीचे वर्गाकार लकड़ी का फ्रेम जो परस्पर एक साथ जुड़े रहते हैं, इसकी अपनी विशेषता है। **(देखें चित्र-६)** लकड़ी से बने इस फ्रेम में चारों तरफ बिरंजी (कीलें) लगी रहती हैं; जिन पर फूलों के जाल कसे जाते हैं। हथिनी के नीचे वाले वर्गाकार हिस्से में अगर केले का काम करना हो तो उसे माढ़कर केले के तने से तैयार विभिन्न प्रकार के तैयार पुष्पों, बेल-बूटों से सजाया जाता है अन्यथा फूलों की लड़ी द्वारा भी उसे सज्जित किया जाता है।

तिदरा

फूल बंगला कला में प्रयुक्त यह ठाठ (फ्रेम) अन्य फ्रेमों से कुछ बड़ा एवं भिन्न होता है। तीन छोटे दरवज्जों (तीन दरों) का भाव दर्शाने वाला यह फ्रेम बंगले की ऊपरी मंजिल में प्रयुक्त होता है। **(देखें चित्र-७)** आयताकार बने इस फ्रेम में बराबर दूरी पर दो फंटी (तीन हिस्सों में विभक्त करती हुई) लगाई जाती हैं जिससे इसका स्वरूप झरोखों की भाँति प्रदर्शित होता है। फूलों की लड़ियों से सुसज्जित इस तिदरा को छज्जे आदि लगाकर आकर्षक बनाया जाता है।

मार्का

फूल बंगले में मार्का ऊपर की ओर लगाये जाते हैं। त्रिभुजाकार आकृति में बना यह मार्का इसकी मुख्य शोभा होता है। फूल बंगला के कस जाने पर[१] पुष्पों से सज्जित बंगले में यह मार्का सबसे ऊपर की ओर लगाये जाते हैं। **(देखें चित्र-८)** विविध प्रकार के फूलों की लड़ी से सुसज्जित यह फ्रेम ऊपर की मंजिल पर प्राय: मध्य भाग में लगाया जाता है। कभी-कभी इसी मंजिल में दोनों ओर भी समान रूप से इस फ्रेम का प्रयोग किया जाता है।

छज्जे

बंगला निर्माण छज्जे का प्रयोग नीचे तथा ऊपर दोनों मंजिलों में होता है। **(देखें चित्र-९)** नीचे की मंजिल में श्रीविग्रह के दोनों ओर की बगलियों, मुख्य दरवज्जे एवं ऊपर की मंजिल पर इन छज्जों का प्रयोग देखते ही बनता है। छज्जे की मुख्य शोभा झुबिया (लटकन) होती है। विभिन्न प्रकार के पुष्पों से तैयार छोटी-छोटी झुबिया छज्जे पर लगाकर कारीगर इसे नीचे ही तैयार कर लेते हैं जिसके बाद यह छज्जे तैयार फूल बंगला पर यथास्थान लगाये जाते हैं। फूल बंगला कला में इन छज्जों का आकर्षण ही रहा है कि परंपरागत वाणी साहित्य में झुबिया (लटकन) से सज्जित इन छज्जों का वर्णन १७ वीं १८ वीं शताब्दी में रचित ग्रन्थों की पाण्डुलिपियों में इनका वर्णन स्पष्टत: देखा जा सकता है। जो प्राचीन बंगलों में इसका महत्व दर्शाने वाला है-

---

१. फूल बंगला के अलग-अलग ठाठ को सूतली के बँधों द्वारा यथा स्थान बाँधने की प्रक्रिया बंगला को कसा जाना कहलाती है।

.... कंज के कमल राजैं माधवी के छज्जा छाजैं,
पीत चमेली के लटकन अति चारू हैं। [१]...

... फूलन की पिछवाई ढारी आलिनु जालिनु वारी।
फूलन के छज्जे तर झौंरा भौंरा गुंजन न्यारी।।... [२]

बिछैया

यह ठाठ फूल बंगले के आधार तल में प्रयुक्त होता है। फूल बंगला कला में जहाँ मार्का सबसे ऊपर की ओर लगते हैं वहीं बिछैया इसके विपरीत ठीक नीचे की तरफ। फूल बंगला कला में पिछवाई की भाँति बिछैया पर भी बारीक कारीगरी की जाती है। इस पर कभी केले के तने की कटिंग से अलंकारिक बेल-बूटे (देखें चित्र-१०), कभी लीलाएँ तो कभी फूलों के सुन्दर जाल बनाए जाते हैं। (देखें चित्र-११) प्रभु के सिंहासन के ठीक नीचे बंगले की पूरी लम्बाई के बराबर हिस्से में पिछवाई को (चित्रानुसार) अत्यधिक आकर्षक स्वरूप में सजाया सँवारा जाता है।

बुर्जी

महल के गुम्बद की भाँति फूलों से सुसज्जित बुर्जियाँ फूल बंगले का मुख्य आकर्षण होती हैं। पृथक्-पृथक् देवालयों में अलग-अलग आकार की बुर्जियाँ प्रयुक्त की जाती हैं। मंदिरों में आयोजित फूल बंगलों में जहाँ बुर्जी श्रीविग्रह के ऊपर लगाई जाती हैं वहीं कभी-कभी शोभा बढ़ाने हेतु एक से अधिक भी प्रयुक्त की जाती हैं। मंदिरों में जहाँ परम्परागत बुर्जियाँ लकड़ी की मिलती हैं वहीं आजकल बाँस की खपच्ची से बनी बुर्जी भी प्रचलन में है। बुर्जी पर ऊपर की ओर छोटी-छोटी कीलें ठुकी रहती हैं। (देखें चित्र-१२) जिन पर फूलों की लड़ियाँ आकर्षक ढंग से लगाई जाती हैं। (देखें चित्र-१३) फूल के अलावा कभी-कभी केले का काम भी इन बुर्जियों पर किया जाता है। केले के तने की सुन्दर कटिंग से तैयार बेल-बूटों से सुसज्जित इन बुर्जियों की शोभा देखते ही

१. १७ वीं शताब्दी में विद्यमान रसिक संत प्रेमदास जी द्वारा रचित फूल बंगला परंपरा विषयक एक पद जिससे तत्कालीन समय में फूल बंगला कला की पारिभाषिक शब्दावली के अंतर्गत 'छज्जा' शब्द दर्शित है।
संपूर्ण पद परिशिष्ट में उल्लिखित है।

२. १८ वीं शताब्दी में विद्यमान संत वल्लभ रसिक जी द्वारा रचित फूल बंगला परंपरा विषयक एक पद जिससे तत्कालीन समय में फूल बंगला कला की पारिभाषिक शब्दावली के अंतर्गत 'छज्जा' शब्द दर्शित है। उक्त पद भी परिशिष्ट में उल्लिखित है।

बनती है। (देखें चित्र-१४) पाषाण, छतरी एवं बुर्जियों की भाँति ही इन बुर्जियों पर भी ऊपर की ओर मध्य भाग में लोहे अथवा लकड़ी का शिखर बना रहता है। जिसे फूलों से सजाया जाता है।

गौख

यह ठाठ आजकल फूल बंगलों में कम ही देखने को मिलता है। फिर भी प्राचीन परंपरागत कुछ स्थलों पर यह फ्रेम यदा कदा उपयोगार्थ देखा जा सकता है। वर्तमान फूल बंगला कला में कम दिखने वाला यह फ्रेम अपनी उपस्थिति से इसकी शोभा को कई गुना बढ़ा देता है। (देखें चित्र-१५) यह गौख समकोणनुमा होती है। जिन पर छोटी-छोटी कीलें लगी रहती हैं। इन्हें फूलों से सजाने के उपरांत बंगले में प्राय: दोनों किनारों की तरफ लगाया जाता है।

झाड़

फूल बंगला के फ्रेमों से अलग बंगला बनने के समय इस फ्रेम का उपयोग अधिकांश किया जाता है। (देखें चित्र-१६) मंदिर प्रांगण में फूलों से सुसज्जित यह झाड़ बरबस ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। तरह-तरह के पुष्प एवं हरे पत्तों की लड़ी से तैयार यह झाड़ मंदिर प्रांगण में लटकाए जाते हैं। प्रांगण के मध्य भाग में चित्रानुसार बड़ा झाड़ तथा चारों कोनों पर छोटे-छोटे झाड़ लटकाने की परंपरा है।

फूलबंगला की तैयारी :

ग्रीष्म काल में वृन्दावन के देवालयों में बनने वाले फूल बंगलों का आकर्षण जन मानस को सहज ही अपनी ओर खींचता है। फूल बंगलों का यह प्राकृतिक नयनाभिराम दृश्य मानव-मन को एक नई ऊर्जा एवं स्फूर्ति प्रदान करता है। स्थानीय जन के प्रकृति प्रेम का पर्याय, मंदिरों में सायं काल आयोजित यह फूल बंगला कला कई चरणों में सम्पन्न होकर भव्यता प्राप्त करती है; जिसे बंगला के विशेषज्ञों सहित कुशल कारीगरों का समूह सुनियोजित व्यवस्थानुसार सम्पन्न करता है। विशेषज्ञों की मानें तो फूल बंगला निर्माण एक प्रकार का **'कच्चा काम'** है। सायंकाल मंदिर में श्रीविग्रह के दर्शन- समय तक जिसका महत्व होता है। अगले दिन प्रात:काल ठाठ (फ्रेम) की सफाई की जाती है तथा पुन: नया बंगला बनाने की प्रक्रिया आरम्भ होती है। चूँकि बंगला में विभिन्न प्रकार के पुष्पों का प्रयोग होता है और इन्हें अधिक समय तक सुरक्षित एवं ताजा बनाये रखने हेतु परम्परागत विधियाँ अपनाई जाती हैं। जिससे सायंकाल फूल बंगला

के दर्शन के दौरान वही प्राकृतिक चमक प्रदर्शित हो सके। इस सब के चलते फूल बंगला निर्माण हेतु अत्यन्त सावधानीपूर्वक इसके कार्य को पृथक-पृथक चरणों में सुनियोजित रीति से पूर्ण किया जाता है। सर्वप्रथम सहायक कारीगरों द्वारा ठाठ की सफाई के उपरान्त बंगले में केले का काम आरम्भ किया जाता है। जिसमें ये लोग केले के तने की कटिंग के द्वारा विभिन्न प्रकार के अलंकारिक बेल-बूटे, शुक-पिक तैयार करने की प्रक्रिया में जुट जाते हैं। (देखें **चित्र-२८**) चूँकि यह कार्य समय-साध्य है इसलिए उस्ताद लोग भी समय का ध्यान रख कटिंग का कार्य आरम्भ करते हैं और सहायक कारीगर उस कटिंग को उनके निर्देशन में यथास्थान आलपिन द्वारा व्यवस्थित करते जाते हैं। इस प्रक्रिया में एक ठाठ (फ्रेम) का कार्य पूरा होने पर उसे केले के तने की कटिंग के उपरान्त निकलने वाली कतरन (छीलन) से ढक कर हल्का सा पानी का छिड़काव कर दिया जाता है। (देखें **चित्र-२९**) जिससे सायंकाल श्रीविग्रह के दर्शन के समय तक उसमें वही प्राकृतिक चमक एवं ताजापन बना रहे।

फूल बंगला में केले का कार्य न होने पर सम्पूर्ण बंगला पुष्प की लड़ियों द्वारा ही तैयार किया जाता है; जिसकी तैयारी दोपहर से आरम्भ होती है ताकि सायं बेला तक पुष्प में ताजगी बनी रहें। ठाठ (फ्रेम) पर पुष्पों का जाल बाँधते समय सहायक कारीगर उसकी कसावट का विशेष ध्यान रखते हैं; जिससे विशेषज्ञ को जाल तोड़ने (डिजाइन बनाने) में परेशानी न हो और प्रदर्शित जाल का आकर्षक प्रस्तुतिकरण हो सके। फूल बंगला का कार्य करते समय पंखे एवं कूलर आदि का प्रयोग नहीं किया जाता चूँकि तेज हवा से जहाँ पुष्पों के मुरझाने का भय रहता है वहीं इससे केले की कटिंग का कार्य भी पूरी तरह प्रभावित होता है। दोपहर में माली द्वारा **गुच्छी**[१] (देखें **चित्र-१७**) लाने पर सहायक कारीगर उसे सुलझाते हुए फ्रेम पर लड़ियाँ लपेटना आरम्भ करते हैं तथा छज्जे, मार्का, हथनी, बगली, तिदरा एवं झाड़ आदि पर फूल लगाना आरम्भ करते हैं जिसके बाद विशेषज्ञ उन पर 'जाल तोड़ते' हुए अपना हुनर प्रदर्शित करते हैं। दोपहर में बंगला बनाते समय कारीगरों का एक समूह जहाँ ठाठ (फ्रेम) पर अपना कार्य करता है। वहीं दूसरा समूह मंदिर के प्रांगण हेतु झाड़ तैयार करने में व्यस्त रहता है (देखें **चित्र-१८**) इस कार्य में एक या कभी कभी इससे अधिक विशेषज्ञ अपनी निगरानी में सहायक कारीगरों द्वारा झाड़ तैयार कराते हैं। इसे रायबेल (मोतिया), गैंदा, पत्ता की लड़ी एवं गुलाब की लड़ी आदि से अलंकृत कर

१. माली द्वारा फूलों की लड़ी से तैयार गुच्छ जिसके समूह (पोटली) को स्थानीय जन गुच्छी कहते हैं।

आकर्षक बनाया जाता है। मंदिर-प्रांगण के मध्य भाग में बड़ा झाड तथा चारों कोनों पर इसकी अपेक्षा कुछ छोटे झाड़ लगाने की परम्परा है। कभी-कभी पूरे मंदिर प्रांगण को कई झाडों द्वारा सजाया जाता है। फूल बंगलों की आयोजन परम्परा में बड़ा बंगला बनने पर **फूलों की छत (देखें चित्र-१९)** एवं **पुष्प-गुफा (देखें चित्र-२०)** बनाने की भी परम्परा है। जिनका सौन्दर्य देखते ही बनता है। मंदिर के अहाते में विभिन्न फ्रेमों को परस्पर जोड़ते हुए फूलों की जालियों द्वारा छत बनाई जाती है। फूलों की छत का वर्णन प्राचीन पदों में भी यदाकदा दृष्टिगोचर होता है।[१] जिसके किनारों पर फूलों की कलश युक्त लड़ियाँ तथा मध्य में झाड़ लटके रहते हैं साथ ही प्रवेश द्वार पर पुष्प-गुफा भी बनाई जाती है जिसमें पत्ता, गुलाब, मोगरा एवं गैंदा की लड़ी आदि का उपयोग अत्यन्त खुबसूरती से किया जाता है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर बनने वाली इस गुफा हेतु प्राय: किसी फ्रेम का उपयोग नहीं किया जाता बल्कि तीन मजबूत पतली रस्सियों जो मध्य से कुछ उँची तथा दोनों किनारों पर समान ऊँचाई की होती है; से तैयार की जाती है। दिन भर की भीषण गर्मी से त्रस्त जनमानस सायंकाल विविध पत्र-प्रसूनों से सज्जित पुष्प-गुफाओं में होकर फूलों की छत एवं पुष्पों से अलंकृत झाड़ों के नीचे खड़े होकर बंगला में विराजमान प्रभु की मनोहारी झाँकी का दर्शन कर, अभिभूत हो सुध-बुध खो बैठता है।

फूलबंगला एक सामूहिक कार्य :

फूल बंगला का कार्य करने वाले लोगों का समूह कई वर्गों में विभक्त रहता है। फूल बंगला कला के अन्तर्गत पृथक-पृथक कार्य करने वाला यह समूह परस्पर सामन्जस्य द्वारा सायं बेला तक, दर्शन के समय से पूर्व चमत्कृत करने वाला भव्य बंगला तैयार करता है। इस कला के अन्तर्गत पृथक-पृथक कार्यों द्वारा इसे मूर्त रूप देने हेतु विशेषज्ञों द्वारा अपनी परम्परागत व्यवस्थाएँ बनाई गई हैं। जिसका अनुपालन करते हुए ये लोग स्वकार्य का बेहतरीन प्रस्तुतिकरण करते हैं जिसे निम्नानुसार समझा जा सकता है-

१. सहायक कारीगर, २. कटिंग वाले कारीगर, ३. जाल तोड़ने वाले कारीगर।

सहायक कारीगर-

फूल बंगला के आयोजन में सहायक कारीगरों की महती भूमिका होती है। परम्परानुसार इस क्षेत्र में नए आने वाले लोगों को पुराने सहायक कारीगरों के साथ रखा जाता है जिनके साथ रहकर वे फ्रेमों के नाम, बंगला विशेषज्ञों के सहयोग की विधि आदि कार्य सीखते हैं। उस्तादों के साथ मुख्यत: पुराने

१. देखें परिशिष्ट — बंगला विषयक पदावली पद संख्या ६ की पंक्ति ७।

सहायक कारीगर ही रहते हैं एवं इनके पीछे नई भर्ती। बंगला बनाने के दौरान कुछ प्रक्रियाएँ जैसे **चस मारना** [१] **(देखें चित्र-२१), बटुआ डालना** [२] **(देखें चित्र-२२), झुबिया बाँधना** [३] **(देखें चित्र-२१) केले के पट्ठे उतारना** [४] **(देखें चित्र-२५) मढ़ाई करना** [५], **चीप बनाना** [६] **(देखें चित्र-३०), धागा लगाना** [७] तथा उस्तादों द्वारा तैयार कटिंग को निर्देशानुसार यथा स्थान लगाना आदि कार्य इन सहायक कारीगरों द्वारा ही सम्पादित किए जाते हैं और इन सब कार्यों के अतिरिक्त मंदिर प्रांगण हेतु झाड़ तैयार करना, प्रवेश द्वार की गुफा हेतु विविध प्रकार के फूल एवं पत्तियों की लड़ी बाँधना तथा मढ़ाई के उपरान्त फ्रेम में कटिंग (बेल-बूटे) यथा स्थान लगाकर, तैयार होने पर उन्हें छीलन से ढककर सुरक्षित करने विषयक कार्य इन्हीं सहायक कारीगरों के जिम्मे होते हैं। (चित्र-२९)

कटिंग वाले कारीगर

फूल बंगला कला के अन्तर्गत कटिंग वाले कारीगर विशेषज्ञों की श्रेणी में आते हैं इनका कार्य सहायक कारीगरों द्वारा अपना कार्य किए जाने के उपरान्त आरम्भ होता है। कटिंग वाले विशेषज्ञ फ्रेम के आकार-प्रकार की माप-तौल कर कटिंग के लिए अपने हिसाब से पट्ठे तैयार कराते हैं। तत्पश्चात विशेष प्रकार की कैंची [८] **(देखें चित्र-२६)** द्वारा कटिंग कर बेल-बूटे, विभिन्न प्रकार के पुष्प, तोता, मोर आदि बनाना आरम्भ करते हैं। **(देखें चित्र-२७)** फूल बंगला कला में इनके द्वारा सम्पादित कार्य अलग ही देखा जा सकता है। बगलियों के बार्डर, तिदरा एवं विशेषकर बिछैया पर यह अपना हुनर प्रदर्शित करते हैं। फूल बंगले में केले का काम अत्यधिक समय एवं श्रम साध्य है फिर भी सेवा भाव से जुड़ी इस परम्परा में कारीगरों का कौशल देखते ही बनता है। केले की कटिंग का कार्य करते हुए जब यह उस्ताद लोग बेल-बूटों, तोते-मोर एवं विभिन्न प्रकार के अलंकरणों को मूर्त रूप देने के निमित्त कटिंग के ऊपर पुनः-पुनः कटिंग करते हुए इसे सजाते हैं तो मानो पाषाण पच्चीकारी की भाँति यह कला जीवन्त हो उठती है और इसका आकर्षण देखते ही बनता है।

---

१. फ्रेम बाँधने के उपरान्त या किसी फ्रेम में खाली जगह दर्शित होने पर उस स्थान को फूल से ढकने की प्रक्रिया।

२. फूलों की लड़ी को गोलाई में इस प्रकार लटकाना कि प्रत्येक गोलाई एक समान प्रदर्शित हो।

३. विभिन्न प्रकार के पुष्पों से तैयार लटकन जो छज्जे आदि पर लगाई जाती है।

४. केले के तने को काटने के उपरान्त छीलने की प्रक्रिया।

५. केले के तने से छीलकर निकाले गये पट्ठों को फ्रेम की कीलों के ऊपर लगाने की प्रक्रिया।

६. पट्ठों को लम्बाई में पतला काटकर चीप निकाली जाती है जिसका उपयोग फ्रेम के बार्डर पर होता है।

७. मढ़ाई के उपरान्त पूरे फ्रेम पर धागा लगाया जाता है ताकि पट्ठे बाहर की ओर न निकलें।

८. परम्परागत कैंची जिसके हत्थे लम्बे तथा ऊपर की ओर गोलाई लिए होते हैं।

(चित्र-२८) वर्तमान समय में फूल बंगला के अन्तर्गत केले के तने की यह कला प्रभावित हुई है। लगभग एक दशक पूर्व इस कार्य को लेकर कारीगरों में जो प्रतिस्पर्धा थी वह अब देखने को नहीं मिलती; जिसके चलते अब फूल बंगला कला में प्राय: बंगले को फूलों से ही सज्जित कर दिया जाता है।

जाल तोड़ने वाले कारीगर

फूल बंगला में जाल बनाने की परम्परा पुरानी है। सहायक कारीगरों द्वारा ठाठ पर जाल कसे जाने के उपरान्त विशेषज्ञ स्वयं अपने हाथों से बंगला के विविध फ्रेमों पर उत्कृष्ट जाल तोड़ते हैं।[१] (देखें चित्र-२३) परम्परागत वाणी साहित्य (प्राचीन पाण्डुलिपियों) में फूल बंगला के अन्तर्गत विविध प्रकार के जालों से बंगले को सजाए जाने का विवरण सत्रहवीं शताब्दी से ही मिलना शुरू होता है,[२] हालाँकि इससे यह जानकारी प्रकट नहीं होती कि उस काल में कौन-कौन से जाल बनाए जाते थे; लेकिन फिर भी ये प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ तत्कालीन समय में इसके महत्व का बोध कराते हैं। फूल बंगला कला के इन उस्तादों ने इस परम्परा को पीढ़ी दर पीढ़ी सँवार कर इसे वर्तमान फूल बंगला कला के रूप में विकसित किया है; जिसके अन्तर्गत विविध प्रकार के जाल **वृन्दावनी, अठमास, छ:मास, डबल चौकी अठमास, छह कली के अन्दर छह कली का फूल, हथिनी एवं मार्का आदि में मोर पंखी के जाल** इन बंगलों में सहजतापूर्वक दर्शित होते हैं। **(चित्र पृष्ठ ३१)** 'जाल तोड़ना' तथा जाल तोड़ने हेतु लड़ी बाँधकर फ्रेम को तैयार करना दोनों महत्वपूर्ण कार्य हैं। इनमें जरा-सी भी चूक पूरे बंगले की शोभा को प्रभावित करती है; इसलिए विशेषज्ञ इस कार्य को काफी सतर्कता एवं सावधानीपूर्वक सम्पादित करते हैं। बंगलों में जहाँ प्राय: एक लड़ी के जाल बाँधकर उनमें विविध प्रकार के जाल तोड़ने की परम्परा है वहीं कभी-कभी, **दोहरी लड़ी**[३] के जाल भी बनाए जाते हैं जिनका सौन्दर्य देखने लायक होता है। **(देखें चित्र-२४)**

फूलबंगला-कला में प्रयुक्त पत्र-पुष्प एवं सहायक सामग्री :

विविध प्रकार के पत्र-पुष्पों एवं उनसे तैयार झुबिया आदि की सजावट से एक आकर्षक बंगला तैयार होता है। वर्तमान फूल बंगला कला को भव्यतम्

---

१. फूल बंगला कलान्तर्गत विशेषज्ञ द्वारा विभिन्न प्रकार के जाल (डिजायन में) बनाने की प्रक्रिया।

२. प्रस्तुत विषय के 'फूल बंगला कला का क्रमिक विकास' अध्याय में उल्लिखित विवरणानुसार एवं परिशिष्ट में बंगला विषयक पदावली संख्या ६ पंक्ति ४।

३. फूल बंगलों में प्राय: एक लड़ी से ही विविध प्रकार के जाल तैयार किये जाते हैं लेकिन फूल बंगला का आयोजक (यजमान) धनाढ्य होने पर प्रचुर मात्रा में फूल मँगाकर बंगला सजाया जाता है। जिसमें दोहरी लड़ी का उपयोग होता है।

रूप प्रदान करने में जहाँ बंगला बनाने वाले विभिन्न श्रेणी के कारीगरों की महती भूमिका है, वहीं इस कला की पृष्ठभूमि में विभिन्न प्रकार के फूल पिरोकर उनकी गुच्छी तैयार करने वाले, हरे पत्तों (विशेषकर मोरछली) की लड़ी एवं बंगला हेतु झुबिया आदि बनाने वाले लोगों का कार्य भी अति महत्वपूर्ण है। जिनके सहयोग के बिना बंगला निर्माण की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

वृन्दावन में यमुना के किनारे वाले क्षेत्र एवं विभिन्न बगीचों में पुष्पों की खेती की जाती है और आवश्यकता पड़ने पर यह लोग बाहरी मंडियों से भी फूल का आयात करते हैं। ग्रीष्मकाल में प्रातः एवं सायंबेला में महिलाओं एवं पुरुषों के समूह अपने खेतों तथा बाग-बगीचों में फूल एकत्र करते देखे जा सकते हैं। जहाँ पुरुष मुख्यतः खेतों में फसल की देखभाल एवं तैयार माल को गन्तव्य तक पहुँचाना आदि कार्य करते है। वहीं महिलाओं एवं बच्चों के समूह पुष्पों को पिरोते हुए लम्बी-लम्बी लड़ियाँ तैयार कर उनकी गुच्छी बनाते जाते हैं। चूँकि फूलों की गुच्छी तैयार होने पर उसका वजन बढ़ता है। ऐसे में ये लोग लड़ी बनाने हेतु मजबूत धागे का प्रयोग करते हुए लम्बी सुई द्वारा विभिन्न प्रकार के पुष्पों की गुच्छियाँ तैयार करते जाते हैं। समूह में फूल पिरोते हुए ये लोग विशेषकर रायबेल (मोतिया), गैंदा एवं गुलाब की लड़ियाँ तैयार करते हैं। फूल पिरोने में थोड़ी बहुत सतर्कता गुलाब की लड़ी तैयार करने में बरती जाती है जिसे बच्चों को तैयार करने हेतु नहीं दिया जाता चूँकि गुलाब जितनी बार हाथ में आता है, उतना झड़ता है, इस कारण इसकी लड़ियाँ सावधानीपूर्वक तैयार की जाती हैं। पुष्पों के अलावा पत्तों की लड़ियाँ भी इन्हीं समूहों के द्वारा तैयार की जाती हैं। पत्तों की लड़ी तैयार करने हेतु ये लोग मुख्यतः 'मोरछली'[1] के पत्ते का प्रयोग करते हैं।

पत्तों को एकत्र करने के बाद ये लोग उसके दोनों किनारों को मोड़कर उसे धागे द्वारा पिरोते हुए इसकी लम्बी-लम्बी लड़ियाँ तैयार करते हैं। **फूल बंगलों की अधिकता के चलते अब तो फूल-पुवाई की एक रोजगारपरक परम्परा-सी चल पड़ी है।** इन लोगों के बाकायदा नगर में अपने समूह हैं, जिनमें अधिकांश महिलाएँ होती हैं। वृन्दावन में मालीपाड़ा, चुंगी चौराहा, परिक्रमा मार्ग आदि स्थानों पर अपने घरों में ये महिलाएँ फूल पुवाई का कार्य करती देखी जा सकती हैं। विभिन्न प्रकार के पुष्पों एवं पत्तों की लड़ी तैयार करने के साथ ही ऐसे समूहों द्वारा फूल बंगला हेतु 'झुबिया'[1] भी तैयार की जाती हैं जिनका उपयोग बंगला में छज्जों आदि पर किया जाता है।

---

१. चमकदार तथा लम्बे समय तक ताजा बने रहने के कारण मोरछली के पत्तों का प्रयोग किया जाता है।

फूल बंगला कला में जितना योगदान इन पत्तों की लड़ी, विविध प्रकार के पुष्पों की गुच्छी एवं झुबिया आदि का है; उतनी ही महत्वपूर्ण फूल बंगला में प्रयुक्त सहायक सामग्री है। जिसके उपयोग से यह फूल बंगला चरणबद्ध तरीके से तैयार होता हुआ पूर्णता प्राप्त करता है। फूल बंगला बनाने हेतु सहायक सामग्री एक दिन पूर्व ही बाजार से मँगाकर उसकी जाँच कर ली जाती है। जिससे कार्य में व्यवधान उत्पन्न न हो। इस सन्दर्भ में उस्ताद (ठेकेदार) द्वारा सहायक कारीगर को सामान लाने हेतु निम्नानुसार सूची दी जाती है-

१. आलपिन २. धागा (पिण्डा) ३. सितारे
४. गोटा ५. डाक पन्नी (पीतर पन्नी)

उक्त सामग्री का प्रयोग करते हुए आलपिन द्वारा केले के तने की कटिंग को यथास्थान व्यवस्थित किया जाता है तथा धागा केले की मढ़ाई के ऊपर लगाया (घुमाया) जाता है। जिससे मढ़ाई की मजबूती बनी रहे। गोटा का उपयोग मढ़ाई वाले फ्रेम के बॉर्डर पर किया जाता है, वहीं सितारे केले के तने की कटिंग के ऊपर आलपिन द्वारा लगाए जाते हैं एवं विविध रंगों की डाक पन्नी केले की कटिंग को सजाने हेतु प्रयुक्त होती है। हालांकि आजकल डाक पन्नी का प्रयोग फूल बंगलों में कम ही देखा जाता है; लेकिन यदाकदा इसका प्रयोग केले के तने से तैयार विविध रंगों की बेलों, तोता, मोर एवं हंस आदि की गर्दन, पंख एवं चोंच आदि को सजाने में होता है।

फूलबंगलों की विविधताएँ :

वृन्दावन की वर्तमान फूल बंगला कला परम्परा अनूठी एवं विविधताओं से परिपूर्ण है। इस कला के विशेषज्ञ लोगों का एक पूरा वर्ग नगर में विद्यमान है। जिन्होंने इस सेवा भाव प्रधान परम्परा को नव आयाम प्रदान किए हैं। परम्परागत रूप से मंदिरों में बनने वाले इन फूल बंगलों के विशेषज्ञों ने अपने नूतन प्रयोगों से इसे बुलन्दी की ओर अग्रसर किया है, जिससे इसकी लोकप्रियता बढ़ी है। अब यह कला परम्परा देवालयों से बाहर श्रीमद्भागवत कथा के आयोजनों **(देखें चित्र-३१)**, विवाह समारोहों **(देखें चित्र-३२)**, रासलीलाओं **(देखें चित्र-३३)** एवं अन्य आयोजनों में भी देखी जा सकती है। विभिन्न अवसरों पर आयोजित

१. लगभग सात से आठ इंच की लम्बाई में तैयार होने वाली (लटकन) झुबिया जिसमें नीचे की ओर गुलाब तथा मध्य में गैंदा एवं रायबेल के पुष्प पिरोये जाते हैं। इसमें ऊपर की ओर कुछ धागा खाली छोड़ा जाता है जिससे छज्जे की कीलों पर इसे लटकाया जा सके। तैयार झुबियों पर बाँकला (चमकदार धागा) भी लगाया जाता है। सत्रहवीं–अठारहवीं शताब्दी के अंतर्गत रचित वाणी साहित्य में फूल बंगला विषयक पदों में झुबिया (लटकन) का पर्याप्त विवरण मिलता है। (देखें परिशिष्ट)

इन फूल बंगलों का वैविध्य देखते ही बनता है। बदलते परिवेश में फूलों के साथ-साथ सब्जियों (देखें चित्र-३४), फलों, मेवों (देखें चित्र-३५) एवं कभी-कभी नोटों (रुपयों) के बंगले भी देखने को मिलते हैं। सब्जियों से बनने वाले इन पृथक-पृथक बंगलों में इनका प्रयोग अत्यन्त कुशलता से किया जाता है। सब्जियों से बनने वाले बंगलों में विविध प्रकार की सब्जियों का संयोजन करते हुए अलंकारिक बेलों एवं अन्य डिजायनों से कलाकार उसको भव्यता प्रदान करते हैं। ठीक इसी प्रकार विभिन्न प्रकार की मेवा बादाम, अखरोट, चिलगोजा, पिस्ता, छवारे एवं अंजीर आदि का प्रयोग करते हुए विभिन्न डिजायनों के बंगले भी सजाये जाते हैं। वर्तमान परिदृश्य में यह बंगला कला पृथक डिजाइनों एवं विविध रूपों में दर्शित होने लगी है; जिसमें न तो परंपरागत बंगला कला के अनुसार पूरे ठाठ (फ्रेम) की आवश्यकता रहती है और न ही पर्याप्त मात्रा में कारीगरों की। ऐसे में बंगला विशेषज्ञ आयोजन कराने वाले की आर्थिक स्थिति के अनुसार अनेक डिजायनों में सुन्दर बंगले तैयार करने लगे हैं। जिनमें कहीं विभिन्न प्रकार के पुष्पों की पंखुड़ियों का प्रयोग (देखें चित्र-३९) तो कहीं नाना प्रकार की दालों का प्रयोग करते हुए सजावट की अन्यान्य विधियाँ देखी जा सकती हैं।

नये रूपाकार ग्रहण करती यह कला परम्परा अब देवालयों से बाहर श्रीमद्भागवत्, रास एवं विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर भी दर्शित होती है; जिससे इसकी ख्याति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक जा पहुँची है, हालाँकि देवालयों, श्रीमद्भागवत के आयोजन एवं अन्य अवसरों पर बनने वाले बंगलों में थोड़ी भिन्नता पाई जाती है; लेकिन प्रथम दृष्टया तो यह सब एक सा ही दिखता है। श्रीमद्भागवत के आयोजन में जहाँ व्यासपीठ के हिसाब से इसका नक्शा देवालयी बंगलों से अलग होता है वहीं विवाह समारोह में होने वाला फूलों का काम भी परम्परागत कला परम्परा से पृथक देखा जा सकता है।

बदले परिवेश में बंगला-कला :

फूल बंगला कला जो कभी सीधे तौर पर पुष्प सज्जा से ही संबंधित थी, वर्तमान परिदृश्य में अनेक रूपों में प्रकट देखी जा सकती है। एसे बंगलों को कहीं विविध प्रकार की आधुनिक सामग्री के साथ अल्प मात्रा में पुष्पों का प्रयोग करते हुए तैयार किया जाता है। तो कहीं-कहीं बिना पुष्प का प्रयोग किए ही बंगला सदृश-दृश्य उपस्थित कर दिया जाता है। चूंकि फूल बंगला निर्माण में पर्याप्त मात्रा में पुष्प एवं केले के तनों की आवश्यकता होती है जिनका हर समय सुलभ रहना सम्भव नहीं। ऐसे में इस कला से जुड़े लोगों ने उक्त समस्या

के अनेक विकल्प तलाश रखे हैं, जिसके सहारे वे लोग रास लीला, श्रीमद्भागवत, विवाह-समारोह एवं अन्य अवसरों पर इस प्रकार के बंगले **डोरी, फोम, थर्मोकोल की सीट, रंगीन कागज एवं सोला**[१] आदि का प्रयोग कर फूल बंगला से पृथक किन्तु देखने में उसका जैसा बंगला तैयार करते हैं। इस प्रकार की सामग्री से तैयार यह बंगले देखने में आकर्षक लगते हैं। कारीगरों की मानें तो इस प्रकार के सूखे कामों से उन्हें काफी बचत भी होती है। बंगला का एक काम पूरा होने पर वहाँ प्रयुक्त इस सामग्री का वह पुन:-पुन: अन्य स्थानों पर भी प्रयोग कर लेते हैं। इस प्रकार के बंगलों में प्रयोग की जाने वाली सामग्री को निम्नानुसार समझा जा सकता है-

१. डोरी

पुष्पों की लड़ी के विकल्प के रूप में इसका प्रयोग कई स्थानों पर देखा जा सकता है। (देखें चित्र-३६) हालांकि दूर से देखने पर यह डोरी रायबेल (मोतिया) की लड़ी की भाँति दर्शित होती है; लेकिन पुष्पों की लड़ी की भाँति वह प्राकृतिक शोभा इस से दर्शित नहीं होती। बंगला-कला में इस डोरी का प्रयोग अत्यधिक सस्ता पड़ता है जहाँ फूलों की लडियाँ एक बार बंगला बनने के बाद पुन: उपयोग में नहीं लायी जा सकतीं वहीं डोरियों का प्रयोग पुन:-पुन: किया जा सकता है। फूल एवं डोरी के जाल में पर्याप्त अन्तर स्पष्ट देखा जा सकता है। प्रथम तो यह कि फूलों की लड़ी जैसी शोभा इन डोरियों से दर्शित नहीं होती चूँकि बंगले में जाल बनाते समय फूलों की लड़ी छोटी पड़ने या टूटने पर उन्हें गाँठ लगाकर जोड़ दिया जाता है जो देखने पर दर्शित नहीं होती ठीक इसके विपरीत अगर यह डोरी फ्रेम पर छोटी पड़ती है तो इस पर लगने वाली गाँठ अलग ही दर्शित होती है। जो देखने में अच्छी नहीं लगती। दूसरा इन डोरियों के प्रयोग में पुष्प लड़ी की भाँति जाल तोड़ने की प्रक्रिया सम्भव ही नहीं।

२. थर्मोकोल

प्राकृतिक सौन्दर्य से परे ऐसे बंगलों में इसका प्रयोग प्राय: देखा जा सकता है। थर्मोकोल की शीट का प्रयोग जहाँ केले के तने के विकल्प के रूप में मढ़ाई हेतु किया जाने लगा है (देखें चित्र-३७) वहीं इसमें एक विशेष प्रकार की तैयारी

---

१. एक प्रकार का सफेद मजबूत कागज जो कलकत्ते से मँगाया जाता है। इसकी कटिंग द्वारा कारीगर उत्कृष्ट डिजायनें बनाते हैं। बंगाल में इसका प्रयोग जहाँ सजावट के तौर पर बहुधा देखा जा सकता है, वहीं विवाह आदि में भी वर द्वारा धारण करने हेतु इसकी शंक्वाकार टोपी प्रयोग में लाई जाती है।

बिना हत्थे की पतली छुरी द्वारा आकर्षक जालियाँ तराशने के उपरान्त उन्हें कलाकारों द्वारा विभिन्न प्रकार के रंगों से सजाकार बंगले को सुसज्जित किया जाता है। बंगला में सजावट के लिए थर्मोकोल की सीट पर सखी, तोता, मोर एवं विभिन्न प्रकार के पुष्प आदि काढकर उनकी कटिंग करने के उपरान्त उसे नाना प्रकार के रंगों से आकर्षक बनाते हैं। इस प्रकार के बंगलों में प्रत्येक उस स्थान पर थर्मोकोल का प्रयोग किया जाता है, जहाँ फूल बंगला में केले के तने का प्रयोग होता है।

३. फोम

बंगला-कला में फोम का प्रयोग आजकल विभिन्न प्रकार के पुष्प, आलंकारिक बेलों एवं अन्य डिजायनों को तैयार करने हेतु किया जाने लगा है। केले के तने से पट्ठा छीलकर कटिंग तैयार करने के विकल्प के तौर में उपयोग की जाने वाली इस फोम का प्रयोग कर कारीगर इससे केले के कार्य की भाँति उत्कृष्ट डिजाइनें तैयार कर उसे थर्मोकोल से मढे फ्रेम पर आलपिनों से व्यवस्थित करते हुए सजाते हैं। (देखें चित्र-३८)

४. रंगीन कागज एवं सोला

उपरोक्त सामग्री सें बंगला सजाते समय थर्मोकोल की मढ़ाई के ऊपर रंगीन कागज लगाने के बाद फोम या सोला[१] की कटिंग उस पर आलपिन द्वारा व्यवस्थित की जाती है। सफेद थर्मोकोल की सीट पर रंगीन कागज इसी उद्देश्य से लगाए जाते हैं कि इस पर लगने वाली फोम की सफेद कटिंग का भाव स्पष्ट प्रदर्शित किया जा सके। फूल बंगला कला में रंगीन कागज के ऊपर लगने वाली कटिंग हेतु जहाँ प्राय: फोम का प्रयोग किया जाता है। वहीं कभी कभी विशेष कार्य होने पर इसके स्थान पर 'सोला' का प्रयोग भी करते हैं जो कोलकाता से मँगाया जाता है। (देखें चित्र-३८) इसकी कटिंग की शोभा देखते ही बनती है।

---

१. देखें टिप्पणी १ पृष्ठ २२।

फूल बंगला

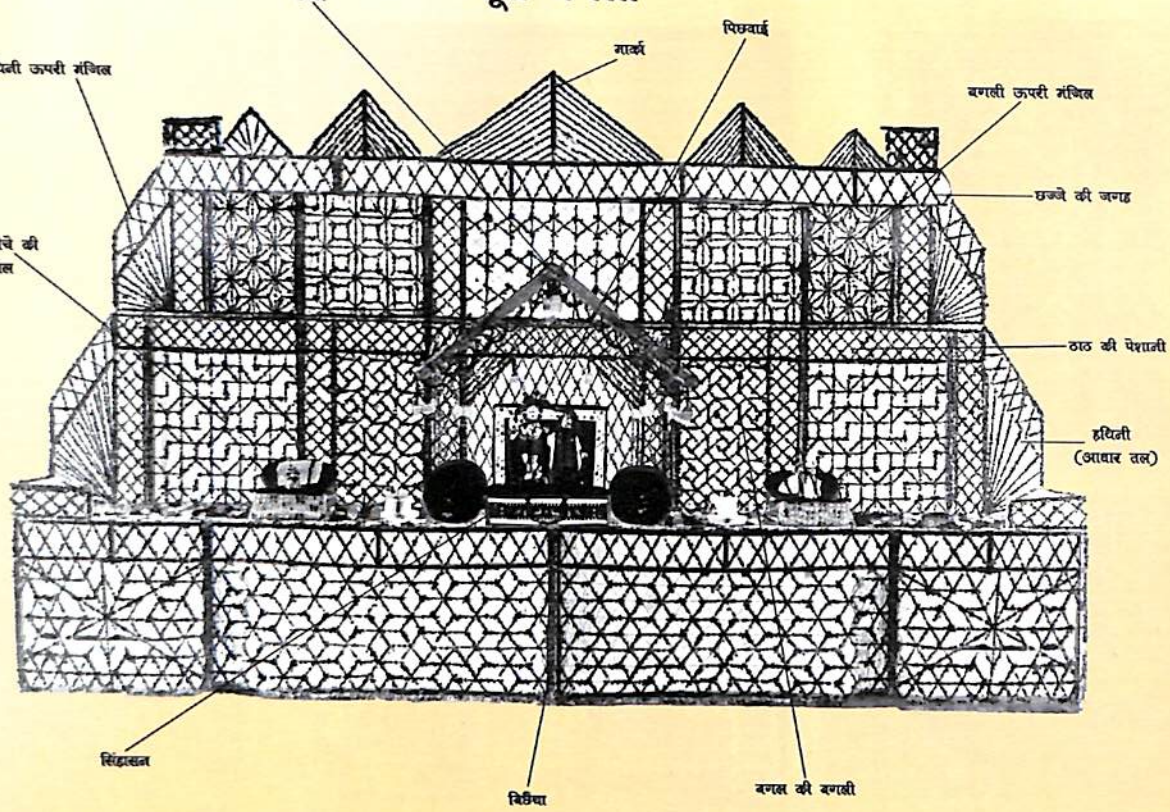
छप्पर
पिछवाई
गार्डर
हथिनी ऊपरी मंजिल
बगली ऊपरी मंजिल
छज्जे की जगह
बगली बीचे की मंजिल
ठाठ की पेशानी
हथिनी (आधार तल)
सिंहासन
बिठिया
बगल की बगली

चित्र-१

फूल बंगला में प्रयुक्त फ्रेम

बंगले में प्रयुक्त फ्रेम जिनमें चोबे (कील) दर्शित है

(चित्र-२) पृष्ठ-८

बंगले में श्री विग्रह के आगे की ओर लगने वाला दरवाजा

(चित्र-३) पृष्ठ-१०

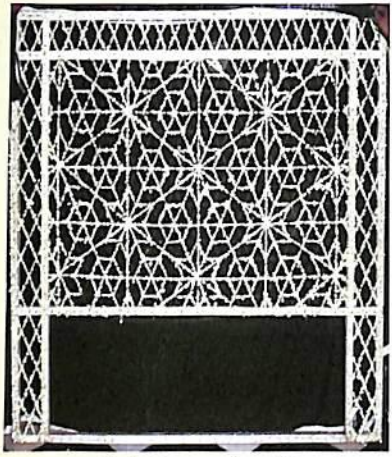

जाल तोडने के उपरान्त तैयार पिछवाई

(चित्र-४) पृष्ठ-११

फूल बंगले में लगने को तैयार बगली

(चित्र-५) पृष्ठ-११

किनारे की ओर प्रयुक्त हथिनी

(चित्र-६) पृष्ठ-११

फूल बंगला में प्रयुक्त फ्रेम

बंगला की ऊपरी मंजिल में विविध पुष्प एवं पत्तों से सुसज्जित तिदरा
(चित्र-७) पृष्ठ-१२

बंगला में प्रयुक्त एक ठाठ के ऊपर लगे मार्का का चित्र (चित्र-८) पृष्ठ-१२

छज्जा तैयार करता कारीगर (चित्र-९) पृष्ठ-१२

केले के तने की कंटिंग से तैयार होते बिछैया का
(चित्र-१०) पृष्ठ-१३

बंगले के आधार तल में पुष्पों से अलंकृत बिछैया का चित्र
(चित्र-११) पृष्ठ-१३

फूल बंगला में प्रयुक्त फ्रेम

बंगलों में प्रयुक्त लकडी की बुर्जी का चित्र जिसमें केले की मडाई एवं पुष्प सज्जा हेतु छोटी कीलें दर्शित है।
चित्र-१२ (पृष्ठ-१३)

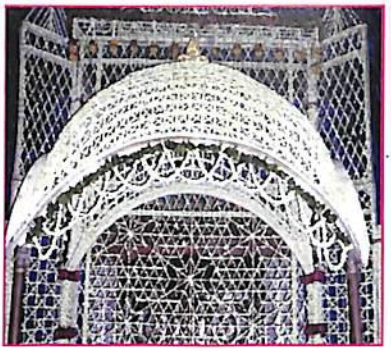

बंगलों के मध्य भाग में प्रयुक्त पुष्पों से सज्जित बुर्जी का चित्र जिसके मध्य में ऊपर की ओर शिखर भी दर्शित है। चित्र-१३ (पृष्ठ-१३)

केले मे तने की कटिंग से तैयार बुर्जी
चित्र-१४ (पृष्ठ-१४)

बंगला में किनारे की ओर नीचे तथा ऊपर की मंजिल में लगी गौख का चित्र
चित्र-१५ (पृष्ठ-१४)

मंदिर के प्रांगण को झाड़ द्वारा सजाने की तैयारी करते कारीगर
चित्र-१६ (पृष्ठ-१४)

फूल बंगला में प्रयुक्त पुष्प एवं झाड़

फूल बंगलों में प्रयुक्त विविध पुष्पों की लड़ियॉ एवं गुच्छी सुलझाते कारीगर का चित्र
(चित्र-१७) पृष्ठ-१५

प्रांगण के मध्य भाग एवं अन्य स्थानों के लिए झाड़ तैयार करते कारीगर
(चित्र-१८) पृष्ठ-१५

विविध पत्र-पुष्पों से तैयार गुफा
चित्र-२० (पृष्ठ-१६)

फूलों की लड़ी से छत बनाता कारीगर
चित्र-१६ (पृष्ठ-१६)

जाल एवं झाड़ तैयार करते विशेषज्ञ

छज्जे पर गुलाब की चस लगाता
कारीगर जिसमें झुबिया भी दर्शित है
(चित्र-२१) पृष्ठ-१७

झाड़ पर बटुआ डालता कारीगर
(चित्र-२२) पृष्ठ-१७

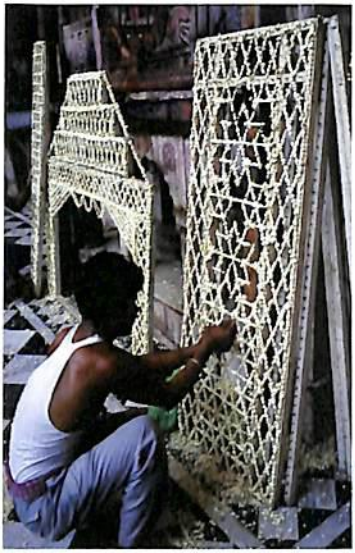

ठाठ पर जाल तोड़कर हुनर दिखाता विशेषज्ञ
(चित्र-२३) पृष्ठ-१८

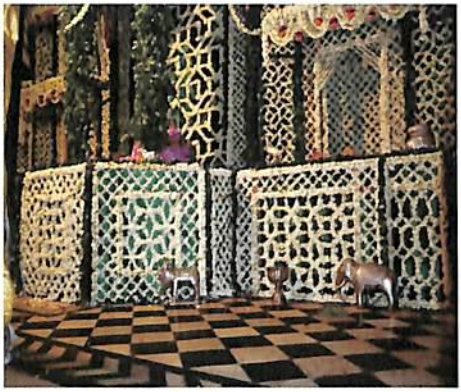

दोहरी लड़ी के जाल से अलंकृत
बिछैया का चित्र
(चित्र-२४) पृष्ठ-१८

बंगला निर्माण में केले के तने का प्रयोग

केले के तने को काटकर पटठे छीलता कारीगर (चित्र-२५) पृष्ठ-१७

विशेष प्रकार की कैंची से केले की कटिंग का कार्य करता विशेषज्ञ (चित्र-२६) पृष्ठ-१७

कटिंग को ठाठ पर व्यवस्थित करता विशेषज्ञ (चित्र-२७) पृष्ठ-१७

केले के तने की कटिंग से तैयार आकर्षक बिछैया जिसमें अलंकृत पुष्प एवं आकर्षक शुरू दर्शित है (चित्र-२८) पृष्ठ-१५

कटिंग को सुरक्षित रखने हेतु ठाठ पर पड़ी छीलन (चित्र-२९) पृष्ठ-१५

ठाठ पर मढ़ाई के उपरान्त चीप लगाता कारीगर (चित्र-३०) पृष्ठ-१७

फूलों की लड़ी से तैयार विविध जाल

छः कली के फूल सहित छःमास जाल (बड़ा फ्रेम)

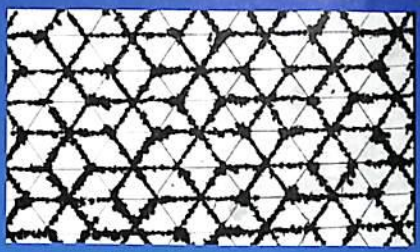

(फूल के अन्दर फूल युक्त) छःमास का जाल

छःमास (छःकली का फूल)

अठमास सादा

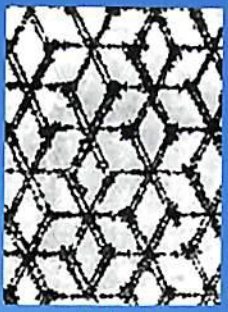

छःमास (पृथक)

अठमास जाल तोड़कर लड़ी भरकर

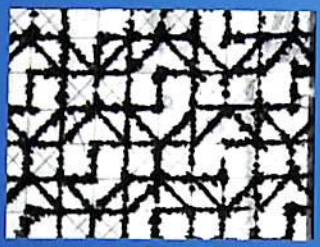

डबल चौकी अठमास

छः कली के अन्दर छः कली का फूल

जाल तोड़ने के बाद अठमास

वृन्दावनी

जाल मोरपंखी (मार्का पर)

बदले परिवेश में बंगला कला

श्री मद्भागवत कथा के आयोजन हेतु तैयार बंगलानुमा स्टेज (चित्र-३१) पृष्ठ-२१

विवाह समारोह के अवसर पर फूल बंगला सदृश स्टेज का दृश्य (चित्र-३२) पृष्ठ-२१

फूल बंगले के मध्य आयोजित रासलीला का दृश्य (चित्र-३३) पृष्ठ-२१

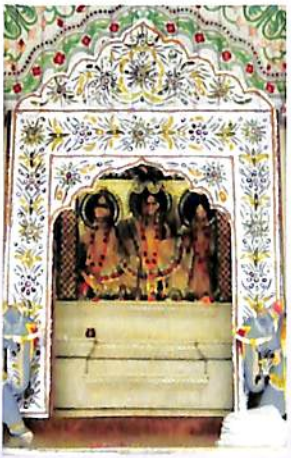

भिंडी, तोरई, नीबू, परवल, आलू एवं बैगन आदि सब्जियों का प्रयोग का तैयार बंगले का चित्र (चित्र-३४) पृष्ठ-२१

मेवा के बंगले में दर्शन देते ठा. राधारमण लाल जी महाराज (चित्र-३५) पृष्ठ-२१

विभिन्न प्रकार के बंगले

रायबेल की लड़ी का भाव दर्शाता डोरी से बने जाल का चित्र (चित्र-३६) पृष्ठ-२२

थर्मोकोल की मढाई पर फोम की विविध प्रकार की कटिंग एवं पुष्पों की लड़ी से सज्जित बंगला का भाव दर्शाता चित्र एवं थर्मोकोल की कटिंग का दृश्य

(चित्र-३७) पृष्ठ-२३

सोला की कटिंग से तैयार बंगला

(चित्र-३८) पृष्ठ-२३

विभिन्न पुष्पों की पंखुडियों से तैयार स्टेज

(चित्र-३९) पृष्ठ-२१

विभिन्न देवालयों में फूल बंगला

अठखम्भा स्थित भट्ट जी मन्दिर
में फूल बंगला का दृश्य

फूलों के बंगले में विराजमान होकर
दर्शन देते ठा. राधावल्लभ लाल

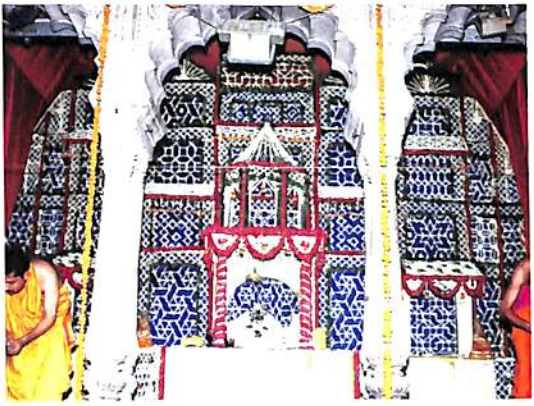

फूल बंगले में विराजमान
ठा. राधारमण लाल जी

विभिन्न देवालयों में फूल बंगला

निधिवन राज
(श्री बाँके बिहारी प्राकट्य स्थल)
पर आयोजित फूल बंगला

छायांकन निषेध होने के
कारण श्री बाँके बिहारी मन्दिर
में श्री विग्रह के दर्शनोपरान्त
फूल बंगले का दृश्य

अठखम्बा स्थित
ठा. राधामोहन मंदिर में
आयोजित फूल बंगला
की झाँकी

विभिन्न देवालयों में फूल बंगला

गोपेश्वर महादेव मन्दिर में आयोजित फूलबंगले के दौरान गोपी वेश में प्रभु का मनोहारी दृश्य

टटिया स्थान मार्ग स्थित गोदाहरदेव मन्दिर में फूल बंगला की झाँकी

यशोदानन्दन मन्दिर में फूल बंगला का दृश्य

कालियमर्दन मन्दिर में फूल बंगला का दृश्य

बनखण्डेश्वर महादेव मन्दिर में फूल बंगला का दृश्य

फूल बंगला पदावली विषयक पाण्डुलिपियाँ

सं १८५० के लगभग व्यासवाणी का फूल रचना विषयक पद जिसमें फूल भवन का वर्णन उल्लिखित है। (र.भा. सं. क्र. १८६)

गो. हित रूपलाल जी कृत बंगला विषयक सं. १८०४ की प्रतिलिपि में उल्लिखित पद जिसमें पुष्प सज्ञा हेतु बंगला शब्द का प्रयोग दर्शित है। (र. भा. सं. क्र. १२०६)

वृ.शो.सं.के ग्रन्थागार में संरक्षित वर्षोत्सव- पदावली में उल्लिखित फूल- सज्ञा विषयक एक्स. न. ३६६३, सीरियल न.४६८

हित वल्लभ एवं प्रेमदास जी कृत बंगला विषयक पदों की सं. १८५० की प्रतिलिपि जिसमें बंगला कला का विस्तार दर्शित हैं। मदन मोहन, भट्ट जी मन्दिर (क्र. १५३)

फूल बँगला विषयक पदावली

[१]

फूलन कौ भवन फूलन कौ पवन बहै, फूलन की सेज रचि फूलन के चँदोये।
फूलन की सारी चोली पहिरैं प्यारी, देखत फूले मोहन के नैनन के कोये।।
फूले उरज करज पसरत ही, पान करत फूले अधर निचोये।
यह सुख निरखि, 'व्यास सखी' फूली फूले अङ्ग न मात सकल दुख खोये।।

(हरिराम व्यास जी कृत, १६ वीं शताब्दी)

[२]

ए दोउ बैठे री, कुसुम कुंज भवन।
विविध रंग पुहुपनि के भूषन, पिय साजत प्यारी जू तन।।
लड़ैंती जू झुकि-झुकि जात, मन्द-मन्द मुसिकात,
बलैयाँ लेत श्याम घन।
श्री हरिदास के स्वामी श्यामा कुंजबिहारिनि पर,
वारि डारौं कोटि मदन-गन।।

(स्वामी श्री हरिदास जी कृत)

[३]

राजत फूल कुंज पिय प्यारी।
भूषन भूषित अङ्ग-अङ्ग छबि तन दुति दीपति न्यारी।।
फूल महल छाजैं अति राजैं फूलन खंभ तिवारी।
फूलन कलस पताका झालर फूलन बहु रङ्ग जारी।।
फूलन हँसन लसन मृदु बोलन चितबन अति अनियारी।
फूल बीजना फूल चँवर कर फूली सँग सहचारी।।
फूलनसौं निर्त्तत अलि गावत आनँद मगन महारी।
लाल रूप हित दंपति संपति निरखि-निरखि बलिहारी।।

(गो. रूपलाल जी कृत, १८ वीं शताब्दी)

[४]

बैठे मणिमय खचित बंगला प्रफुलित चहुँ दिसि मधि फुलवारी।
रागन अनुरागिन अलि गावत निर्तत पुष्पांजलि भरि वारी।।
अंस भुजा कर कमल फिरावत मृदु बतरावत मुसिकन हारी।
श्रीरूपलाल हित पान खवावत निरखि-निरखि छवि पर बलिहारी।।

(गो. रूपलाल जी कृत, १८ वीं शताब्दी)

[५]

बनां फूलौंदा बंगला जोर।
लाल बाग गुल लाल चँबेली सीस फूल सिर मोर।।
जरद दुपट्टा पगड़ी जामा जुलफैं जुलम करोर।
बल्लभ सखि हित साहिब फूली अंबुज दृग झकझोर।।

(श्री हितबल्लभ जी कृत, १७-१८ वीं शताब्दी)

[६]

सखियन फूलन कुंज सजाई।
सौनजुही की गुही मरगोलैं कदली खंभ जराव जराई।।
बिच बिच मोर मोखन मुखरे ऊपर पत्रनु छजलि लगाई।
बहु विध फूल जाल चहुँ दिसि नैं तिन बिच मणि की मणि झलकाई।।
फूलन चिक फूलन पिक सोहैं पिक बैंनी मन अधिक सुहाई।
कोट कँगूरन भौंरन ते मनौ गावत हित दंपति ठकुराई।।
छत छबाब परदा पँखुरिन के फूल कलिनु छिटकी पिछवाई।
बल्लभ युगल फूल फवि पाटन राधाबल्लभ राजत राई।।

(गो. युगलबल्लभ जी कृत, १९-२० वीं शताब्दी)

[७]

देखि री देखि पिय भवन सुखकारी।
फूलन सों रचि पचि कीने हैं श्रीवृषभानु दुलारी।।
लाल गुलाब के खंभ मनोहर छाजेन की छबि भारी।
चंपक बकुल गुलाब निवारौ कीनी है चित्रसारी।।
कुन्द माल की बनी तिबारी विविध पुहुप की जारी।

सुमन यूथ के कलसा सोभित तापर बंदन बारी।।
भूमि रहे चहुँ दिसन झूमका गेंदन की छबि न्यारी।
खेलत तामें लाल लाड़िली मुदित भरत अँकवारी।।
फूलन की पाग फूलन के चोलना फूलन पटुका धारी।
फूलन के लहँगा सारी मधि फूलन अङ्गिया कारी।।
फूलन की सेज फूलन के बँधना फूलन की चौकी मन हारी।
फूलन बने गेदुआ तकिया चहुँ दिशि फूल रही फुलवारी।।
फूलन पंखा कर लिये ठाड़ीं फूल रहीं ब्रज नारी।
गोबिंद प्रभु फूले अति शोभित रस फूले श्रीगोवर्द्धन धारी।।

(श्री गोविन्द स्वामी जी कृत अष्टछाप, १७ वीं शताब्दी)

[८]

निभृत निकुंज प्रिया पिय राजैं।
रतन जटित सिंघासन आसन प्रेम नृपति दल साजैं।।
मधि फुलवारि फुहारे मणि मय छूटत चहुँ दिसि भ्राजैं।
ललितादिक अलि निर्तत गावत राग रागिनी गाजैं।।
अलसौंहे बतरात लाड़िले कोटि काम लखि लाजैं।
जै श्रीरूपलाल हित ललित त्रिभङ्गी मुरली कलरव बाजैं।।

(गो. रूपलाल जी कृत, १८ वीं शताब्दी)

[९]

देखौ सखी फूलन कुंज बनाई।
तापर सघन वृक्ष फूलन के चहूँ ओर रहे छाई।।
डार-डार पर पंछी बोलत दंपति केलि सुहाई।
झरना झरत छुटत जल जंत्रन मनों वरषा रितु आई।।
फूलन सेज रची तिहि भीतर जहाँ पौढ़े सुखदाई।
मुख सों मुख नैंनन सौं नैना उर सौं उर लपटाई।।
श्रीहरिवंशी निज प्रिय सखि सुख अविलोकत मन लाई।
जै श्रीहित नवनीत जु करी कृपा मोहि दैकें सैन बुलाई।।

(नवनीतलाल जी कृत, १७-१८ वीं शताब्दी)

[१०]

बैठे फूल महल पियप्यारी फूली वन संपति फुलवारी।
फूलन के भूषन निजु कर गुहि पहिरावत पहिरत सनमुख छकि पलक टरत नहिं टारी।।
फूलीं ललित अली ललितादिक फूलत लाड़ टहल रुचि कारी।
फूली चटक चैन वृन्दावन जोति चंद्रिका फूली नभ में फूली आनँद रूप उजारी।।
फूलन हार चारू बदलत उर उत हरि इत वृषभानु दुलारी।
सहचरि सुख फूली रति नैनन मैन चैंन फूले अङ्ग अङ्गन फूले राग सुहाग विहारी।।

(श्री सहचरिसुख जी कृत, १७-१८ वीं शताब्दी)

[११]

फूलन सौं फूली कुंज फूलन की सेज मंजु फूले तहां सुख पुंज स्यामा स्याम रंग में।
फूले नैन रूप भूल हास माहिं झरैं फूल भूषन दुकूल सोहैं फूलन के अंग में।।
फूली फिरैं बैनी चारू फूलन के डुलैं हार फूल भरी धरी बाल लाल लै उछंग में।
प्रेमदासि हित वारी फूले हाव भाव भारी केलि-वेलि फूली न्यारी छवि के तरंग में।।

(श्री प्रेमदास जी कृत, १८ वीं शताब्दी)

[१२]

फूल गुलाब कुंज मंजुल में फूले हैं पिय प्यारी।
फूली चन्द चाँदनी ता मधि फूली फूल तिवारी।।
फूलन के तकिया लगि सो हैं छकियाँ सखियाँ लखियाँ री।
बल्लभ रसिक बदन चन्द्रन ते छवि की छुटहिं छटा री।।
फूलन की पिछवाई ढारी आलिनु जालिनु वारी।
फूलन के छज्जे तर झौंरा भौंरा गुंजन न्यारी।।
फूलन सायेवान तने कलसान फूल सिर धारी।
वल्लभ रसिक फूले निसि कुहुकत कल कोकिल शुक सारी।।
चमकहि चन्द अमन्द किरन सों पुलिन चाँदनी सारी।
छये वितान तने अम्बर पर तारापति तारा री।।
फूली रितु रति पति अति फूल्यौ त्रिविध पवन सुखकारी।
बल्लभ रसिक सरोवर मान अमानत फूलनकारी।।

फूल सबीह फबी नीमा गल युगल डोरिया धारी।
फूली भावन चोली दावन फूल कसीदा सारी।।
फूलन के गहने मन गहने फूलन जगि पगिया री।
बल्लभ रसिक अतर अम्बर तर लपट फूल चहुँधाँ री।।
फूल गुलाब आबसी आली लिये दल गुलाब माला री।
फूली कर करपूर दान लै-लै गुलाब सी सारी।।
चौंरन ढारहिं भौंरन टारहिं प्रेम झौंर में डारी।
बल्लभ रसिक चाँदनी सहचरि सूरत साँचे ढारी।।
अली मृदङ्ग बजावहिं गावहिं तानैं भाइ उतारी।
फूलीं चहुँ दिसि कुंज कनाते याते धुनि गुजारी।।
आली के नृत्यहि निहारि निज हारहि देत उतारी।
बल्लभ रसिक मुसकि यारहि उर रहि हारहि करत निहारी।।
फूली रस सीवाँ प्यारी निज भुज पिय ग्रीवा धारी।
फूली पिय भुज तिय भुज तर ह्वै लहि जुग धन कलसा री।।
वृन्दावन बेलिनु हेलिनु की फूल न परत सँभारी।
बल्लभ रसिक अली कर दर्पन ज्यों दरसन पनवारी।।
पियत ही आसव छकन थकन मिस पिय तन हार निहारी।
प्यारी अद्भुत रीति-जीत घृत विकसि निकसि अँसुवा री।।
गह्यौ मौन मंजीर धीर किंकिनि कोलाहल कारी।
बेहद मदन सदन धन लूटन बल्लभ रसिक विहारी।।

(बल्लभरसिक जी कृत, १७-१८ वीं शताब्दी)

[१३]

फूलन फूली हो देखौ फूल कुंज में गौर स्याम तन मन दोऊ।
गौर स्याम सिंगार विराजत रचना गौर स्याम सोऊ।।
गौर स्याम सखी गौर स्याम कौं दुलरावत अदभुत रस भोऊ।
हित बल्लभ छवि रूप निहारत तृण तोरत बलि कोऊ-कोऊ।।

(श्री हित बल्लभ जी कृत, १८-१९ वीं शताब्दी)

[१४]

फूले डौलैं गौर स्याम फूले तरू बेली।
अगनित फूली राजैं संग में सहेली।।
फूलन कौ सीस फूल चंद्रिका रची है।
रीझ रहीं प्यारी सखी सविधि सची है।।
फूलन की बंदनी तरौना अति सो हैं।
फूल्यौ है आनन सम उपमा जु को है।।
अङ्ग फूलन के भूषन बने हैं।
फूलन के भवन धितान जु तने हैं।।
फूलन बिछौया जहाँ-तहाँ छवि छाई।
फूल कौ सिंघासन राजै फूल पिछवाई।।
फूले बैठे राधा लाल फूल भरे गावैं।
चंद हू की चाँदनी की फूल कौं लजावैं।।
निर्तत हैं आगे सखी मानो रूप वारी।
गुनन गहेली विधि कौन से सँवारी।।
मनन की फूल आज तन दरसावैं।
प्रेम छकीं ओली भरि फूल वरषावैं।।
फूल जल फूल थल फूल मित नाहीं।
वृन्दावन हित रूप राजैं गर बाहीं।।

(चाचा वृन्दावनदास जी कृत, १८ वीं शताब्दी)

[१५]

बैठे कुसुम सदन राजैं नागरी नव लाला।
कुंद गुलाब जुही निवारी फूले फूल रंग नाना री
रचि रुचि सखियन रुचिर सँवारी राजत उर माला।।
गावत रस रंग ढरत गुपत गुनन प्रगट करत
रीझि-रीझि अङ्क भरत प्रीतम नव बाला।
फूले मुख सुख के सदन वारों ससि कोटि
मदन वृन्दावन हित निहारि मानौं मत्त मराला।।

(चाचा वृन्दावनदास जी कृत, १८ वीं शताब्दी)

साक्षात्कार

फूल बंगला के कारीगरों में दाऊ के नाम से विख्यात श्रीरामपाल सिंह वृन्दावन के राधावल्लभ मंदिर में परम्परागत रूप से ग्रीष्मकालीन सेवा के अन्तर्गत अपने निर्देशन में फूल बंगला तैयार कराते हैं। उत्कृष्ट कारीगरों के समूह एवं स्वकार्य में हुनर के सबब उन्होंने अपनी ख्याति के झंडे सुदूर प्रदेशों में भी गाड़े हैं। वृन्दावन की फूल बंगला कला के सन्दर्भ में सूक्ष्म जानकारियों से अवगत कराता उनका साक्षात्कार-

प्र०-दाऊ फूल बंगला आयोजन में आप फ्रेमों को ''ठाठ'' नाम से सम्बोधित करते हैं, इसका क्या तात्पर्य है, इस सन्दर्भ में जानकारी प्रदान करें ?

उ०-प्रश्न सुनते ही वह हँस पड़े, उनकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा और कुछ कारीगरों के मध्य बैठे दाऊ विनोदपूर्वक बोले- अरे ! जे ऊ कोई पूछबे की बात है? संजा के समै फूलन के बंगला में बैठे 'ठाकुर' को ठाठ देखबे लायक होय हैं और जे ठाठ बंगला के इन ठाठन तेई बनै है। जासौं हम इन फ्रेमन तेऊ ठाठ ही कहैं हैं।

प्र०-दाऊ वर्तमान समय में फूल बंगला कई स्वरूपों में देखने को मिलते हैं, इस पारम्परिक कला के अंतर्गत पारंपरिक प्रयोग में आने वाली सामग्री के अलावा आज थर्मोकोल, फोम, सोला आदि का प्रचलन बढ़ रहा है। बंगला कला में आए बदलाव के संदर्भ में आप हमें अपनी राय प्रदान करें ?

उ०-देखौ जी यामैं बदलबौ तौ पार्टी के हाथ है, जैसी तेरी कूमड़ी वैसे मेरे गीत, जितेक शक्कर डरैगी बितेक ही मीठौ होएगौ। अगर पार्टी दमदार होय तो हम जे '**सूखौ काम**''[१] कबहूँ नाय करें भलेई हमें बाहर ते माल चौं न मँगानो परै; बैसें हमारी निगाह में पईसा वारे और आम आदमी सबई एक हैं, हमैं तो सबकौ काम करनौ। दाऊ बोले देखौ जी तुमने हम ते कही कि हम थर्माकौल, फोम, सोला जैसे आइटमन कूँ बंगला में चौं लगावैं सो समझ लेउ बंगलन में इन चीजन कौ प्रयोग हमैंऊ नाय जचैं, लेकिन कबहू-कबहू हालातहू ऐसे है जायं कि माल ढूँढबे ते नाँय मिलै और पार्टी तो बस अपनी ठहरी रकम पैई डटी रहै तौ

१. आधुनिक विविध सामग्रियों यथा थर्माकोल, फोम आदि का प्रयोग करते समय केले के तने से मंढ़ाई तथा कटिंग आदि का प्रयोग नहीं होता ! ऐसे कार्य को स्थानीय कारीगर सूखा काम कहकर संबोधित करते हैं।

ऐसे में हम कां करैं, हमें तौ भईया सबन कौ काम साधनौ औरु अब तौ वैसै हू सादी ब्याहन में जा काम की धड़ल्ले ते माँग है।

प्र०—दाऊ आजकल बंगला के बिछैया और फूलों के जाल में वैसी कारीगरी देखने को नहीं मिलती जिसके पहिले कभी हल्ले थे और उस्तादन लोग एक दूसरे के काम को देखने के लिए आते थे। कृपया इस विषय में हमें सविस्तार समझाएं?

ऊ–'दैखो जा बारे में हम तुम्हें पहिलै ऊ बताय चुके हैं। सच्ची कहूँ तौ हुनर पईसन ते दीखै और पार्टी बोलै कि जिन्हीं दामन में अच्छौ बंगला चईयै। वैसैं तुम्हारौ कहनौ हू सही है। उस्तादी के काम आजकल कमई देखबैं कूं मिलैं जाकौ कारण है नये छोरान मैं बो पहिले जैसी ललक नाय रहीं, बस दो दिना हाथ में कैंची आई और बन गए उस्ताद। फिर वो काऊ की सुन्नों पसन्द नांय करें हालांकि काम तो ठीकठाक करैं, लेकिन फिरऊ उन उस्तादन की होड़ कहाँ? उनमें काम के तांई लगन और सेवा भाव उनके कामन में दीखतौ। बिछैया पर नित नई देखबे-दिखाबे लायक लीला सुन्दर नई-नई बेलन की चाल, तोता, मोर, हंस और इन सबके संगई फूलन की कारीगरी के जाल। बो बात तो अब हवा भई। लेकिन ऐसी बात हू नांय कि बो कला बिलकुलई खतम भई, कैई मौकेन पै आज भी बड़े-बड़े उस्ताद लोग अपने हुनर दिखाय कै काम कूं बैसौई जँचाय दैं।'

+ + +

विरासत में मिली फूल बंगला परम्परा को श्री गिरधारी लाल जी ने अपने अभिनव प्रयोगों से नव आयाम प्रदान किये हैं। बचपन से इसी परिवेश में पले बढ़े श्री शर्मा जी अपने क्षेत्र के धुरंधर विशेषज्ञ हैं। पृथक-पृथक नक्शों द्वारा फूल बंगला को ऐसी भव्यता प्रदान करना कि आमजन तो क्या? इस कला से जुड़े बड़े उस्ताद भी इनके हुनर को बस देखते ही रह जाते हैं। इस कला की बारीकियां, नूतन प्रयोगों एवं बंगला कला की परम्परागत शैलियों को उजागर करता श्री शर्मा जी का साक्षात्कार-

प्र०—शर्मा जी फूल बंगला कला में बिछैया पर प्रभु की विविध लीलाओं के दृश्यांकन एवं फूलों के काम में उत्कृष्ट जाल विधान की परम्परा को आपने अब तक सहेज कर रखा है जबकि अन्य स्थलों पर इस प्रकार के काम न के बराबर दिखते हैं। बंगला-कला के इस महत्वपूर्ण पक्ष के प्रति कारीगरों की उदासीनता के प्रमुख कारण क्या हैं?

ऊ–बंगला के अन्तर्गत लीलाएं बनाना, पुष्प की लड़ियों में परम्परागत

जालों जैसे अठ मास, छह मास, वृन्दावनी आदि के साथ ही नये-नये जालों की रचनाएं करना, साथ ही बंगले के आधार तल हेतु विभिन्न प्रकार की लीलाओं तथा नित नई बेलों का संयोजन ही इस कला परम्परा का वैशिष्ट्य है। चूँकि यह काम समय एवं श्रम साध्य होने के साथ-साथ अर्थ साध्य भी है। ऐसे में इस प्रकार के कामों के प्रति कुछ उदासीनता आना स्वाभाविक है। चूँकि हम पीढ़ी दर पीढ़ी इस परम्परा से जुड़े रहे हैं। ऐसे में यह हमारे लिए मात्र आजीविका का साधन नहीं अपितु भावनात्मक रूप से जुड़ी साधना है। इस साधना तथा बुजुर्गों के आशीर्वाद का ही प्रतिफल है कि आज जहाँ प्राय: कारीगरों को उत्कृष्ट जाल तोड़ने एवं लीला आदि बनाना सीखने में बरसों लग जाते हैं। ऐसे में हमने इन शैलियों से इतर किन्तु मूल रूप में उसी परम्परागत शैली को अपने अभिनव प्रयोगों से आगे बढ़ाया है। जिससे वृन्दावन की यह महत्वपूर्ण कला आज तक अपने अस्तित्व को बनाए हुए है।

यह श्री शर्मा जी का बड़प्पन ही है कि वे इस कार्य में अपनी कोई भूमिका न मानते हुए इसे बस श्रीजी की कृपा और साथी विशेषज्ञों का सहयोग ही बताते हैं।

प्र०—शर्मा जी आज बंगलों में इंगलिश फूल जो बंगलौर एवं दिल्ली से आयातित होते हैं; उनके साथ ही अन्य विविध आधुनिक सामग्री का प्रयोग तीव्रता से बढ़ रहा है। प्रतिस्पर्धा के ऐसे दौर में आप अपनी परम्परागत शैली को कैसे बचा सकेंगे?

उ०-देखिये बंगला शब्द ही, सौन्दर्य बोधक है। बंगला की परिभाषा विद्वान लोग भले ही किसी दृष्टि से दें पर हमारी निगाह में बंगला वह है जो ग्रीष्मकाल में श्रद्धालुओं का प्राकृतिक छठा एवं सुरम्य वातावरण से साक्षात्कार कराए। अच्छी से अच्छी सजावट के भाव को लेकर ही आज कला विशेषज्ञ जहाँ बंगलौर एवं दिल्ली से फूलों का आयात करते हैं वहीं उन्होंने उसकी सजावट के कई आधुनिक विकल्प भी तलाश रखे हैं। विनोद पूर्ण लहजे में श्री शर्मा ने कहा-"**देखौ भईया वैसे भी बंगलौर और बंगला सुनबे में एक जैसेई दीखें सो म्हाँ के फूलन की कछू झलक तौ दीखनी चईयै।**" उन्होंने बताया फूल बंगले के आयोजन में नक्शा तो वही होता है और कार्य भी उसी परम्परागत रीति से। इंगलिश फूल का उपयोग अतिरिक्त शोभा की दृष्टि से किया जाता है जो प्राय: मंदिर के जगमोहन के द्वार पर, बंगले की जालियों के बीच बुके (पुष्प गुच्छ) के रूप में सजाए जाते हैं। कभी-कभी इंगलिश फूलों के यह बुके फूलों से सजी

छत पर भी लगाए जाते हैं। रही बात बंगले की परम्परागत शैली को बचाए रखने की तो हम पहले भी बता चुके हैं कि अर्थ से परे आज भी मंदिरों में यह कार्य जहाँ सेवा समझकर किए जा रहे हैं, उन स्थानों पर यह परम्परा आज भी सुरक्षित है।

वृन्दावन के बाँके बिहारी मंदिर में ग्रीष्मकाल के दौरान प्रतिदिन नव्य एवं भव्य फूलों के बंगले बनते हैं। वैसे तो मंदिर में वर्ष पर्यन्त देशी-विदेशी श्रद्धालुओं का सैलाब देखा जा सकता है लेकिन ग्रीष्मकाल में वहाँ बनने वाले ये फूलों के बंगले लोगों का ध्यान बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं। बंगला परम्परा को विविध आयाम प्रदान करने में स्व० बीस गुरु गोस्वामी, स्व० केशवदेव जी, श्री शिवचरण दादा सहित अन्यान्य महानुभावों ने अपनी कला साधना द्वारा इसे जो निखरा हुआ स्वरूप प्रदान किया वह आज तक यहाँ इन बंगलों में सहजता से दर्शित है। फूल बंगला कला के प्रख्यात विशेषज्ञ स्व० शरणबिहारी गोस्वामी (बीस गुरु) के सुपुत्र श्री कुंजबिहारी जी के शब्दों में परम्परा विषयक सूक्ष्मता एवं गहनता उजागर करता साक्षात्कार-

प्र०-कुंज बिहारी जी बाँके बिहारी मंदिर में प्रतिदिन प्रचुर मात्रा में फूल लगता है जबकि यहाँ पुष्पों की खेती एक निश्चित अनुपात में है। ऐसे में आप प्रतिदिन अपना प्रबन्ध कैसे करते हैं?

ऊ-यह बात सही है कि हमारे यहाँ बंगलों में प्रतिदिन फूल की खपत अधिक होती है ऐसे में मात्र वृन्दावन की मण्डी के सहारे निश्चिन्त नहीं रहा जा सकता बल्कि हम मथुरा, दिल्ली, बंगलौर और अन्य मण्डियों के सम्पर्क में भी रहते हैं जिससे कहीं किसी जगह हिसाब गड़बड़ाने पर तत्काल हम अपना प्रबन्ध कर सकें। उन्होंने बताया पुष्पों के साथ-साथ हमें इसकी पुवाई का भी ध्यान रखना पड़ता है। ऐसे में हम लोग माल मिलने पर तत्काल फूल पुवाई की व्यवस्था कराते हैं या किसी को इस काम की जिम्मेदारी देते हैं। जिससे निर्धारित समय तक बंगला तैयार हो सके।

प्र०-गोस्वामी जी आपके पूज्य पिता स्व० शरणबिहारी गो० (बीस गुरु) ने बाँके बिहारी मंदिर की फूल बंगला कला को शीर्ष पर प्रतिष्ठित किया, मंदिर में उस जमाने की कला और वर्तमान बंगलों में कारीगरी के मुख्य अंतर बताएं?

ऊ-कलाकार की पहिचान उसकी कला होती है। हमारे पिताजी ने जीवनभर

साधना करते हुए इस कला को नव आयाम प्रदान किए। मंदिर में ग्रीष्मकालीन बंगलों के दौरान प्रतिदिन एक नया काम जिसमें पृथक-पृथक कटिंग एवं विविध जालों का आविष्कार करना उनका प्रिय शगल था। बंगले के नीचे प्रयुक्त बिछैया के लीलांकन में तो मानो उन्हें महारत हासिल थी। गोस्वामी जी ने बताया कि वह समय कुछ और था जब बड़े उस्ताद लोग अपने सामने बैठाकर ही अन्य कारीगरों को कटिंग सिखाने और उन्हें जाल तोड़ने के गुर बताते थे। ऐसे में नए लोगों को कला की बारीकियाँ सीखने का अवसर मिलता था। उन्होंने बताया कि उस जमाने के सीखे हुए कुछ लोग आज भी विद्यमान हैं। हमें ऐसे लोगों का सम्मान करते हुए उनसे हुनर ग्राह्य करना चाहिए।

वृन्दावन के कुछ बंगला कला विशेषज्ञ

१. श्री गिरधारीलाल शर्मा
व्यासघेरा बनखण्डी,
वृन्दावन- २८११२१
जिला मथुरा (ऊ प्र०)

२. श्री कुंजबिहारी गोस्वामी(कारेलाल)
पुत्र स्व0 श्री बीस गुरु गोस्वामी
बिहारीपुरा, वृन्दावन- २८११२१
जिला मथुरा (ऊ प्र०)
मो० ९७१९०७०९९०

३. श्री रामपाल सिंह
कलकत्ता वाला मंदिर,
राधावल्लभ घेरा, अठखम्भा,
वृन्दावन- २८११२१
जिला मथुरा (ऊ प्र०)
मो० ९८३७११७६४६

४. श्री भिक्की अग्रवाल
राधावल्लभ मंदिर,
अठखम्भा, वृन्दावन- २८११२१
जिला मथुरा (ऊ प्र०)
मो० ९२१९२८४१७३

५. श्री जुगल किशोर शर्मा
व्यासघेरा बनखण्डी,
वृन्दावन- २८११२१
जिला मथुरा (ऊ प्र०)
मो० ९४१२२२६९३६

६. श्री छैल बिहारी डैकोरेटर्स
श्यामकुटी के पास,
परिक्रमा मार्ग, वृन्दावन- २८११२१
जिला मथुरा (ऊ प्र०)
मो० ९८९७९७९८०६

७. श्री लाल बिहारी गोस्वामी
बिहारीपुरा, वृन्दावन- २८११२१
जिला मथुरा (ऊ प्र०)

८. अर्जुन ठेकेदार
गोपेश्वर महादेव, वृन्दावन।
मो० ९८३७०९४९६९

९. श्री गिरीश पाठक
दाऊजी का तिराहा,
पुराना शहर, वृन्दावन- २८११२१
जिला मथुरा (ऊ प्र०)

१०. श्री जगन्नाथ
बड़वाला मौहल्ला, वृन्दावन।
मो० ९८९७६२७४४२

११. श्रीकृष्ण मुरारी गोस्वामी
चीरघाट, वृन्दावन।
मो० ९८३७१६३५१२

फूल बंगला कला–शब्दावली

अठमास	:	बंगला कला में प्रयुक्त एक प्रकार का जाल जो अष्टभुजाकार रूप में तैयार किया जाता है।
इकहरी लड़ी	:	प्राय: बंगला इकहरी लड़ी से ही तैयार होते हैं। रायबेल से तैयार एक लड़ी (सिंगल लड़ी) का प्रयोग हुए बंगला के फ्रेम सजाये जाते हैं।
कुसुम कुंज	:	सोलहवीं शताब्दी में बंगला के सम्बोधन हेतु कुसुम कुंज शब्द का प्रयोग प्रचलित था, जिसके विवरण प्राचीन वाणी साहित्य में मिलते हैं।
गुंजा	:	एक प्रकार का पुष्प तथा कलियों से गुथी लड़ी जिसका प्रयोग बंगला कला के अंतर्गत चस लगाने हेतु भी किया जाता है।
गुच्छी	:	माली द्वारा फूलों से तैयार गुच्छ जिसके समूह (पोटली) को स्थानीय जन गुच्छी कहते हैं।
गोलचा	:	बंगला बनाते समय केले के तने की कटिंग के दौरान उससे बनाई जाने वाली गोल आकृति जो सजावट हेतु प्रयुक्त होती है।
गौख	:	एक प्रकार का समकोणीय फ्रेम जो बंगला में ऊपर तथा नीचे की मंजिलों में किनारों की ओर प्रयुक्त होता है।
चस	:	फ्रेम बाँधने के उपरान्त या किसी फ्रेम में खाली जगह दर्शित होने पर उस स्थान को फूल से ढकने की प्रक्रिया।
चीप	:	पट्ठों को लम्बाई में पतला काटकर चीप निकाली जाती है जिसका उपयोग फ्रेम के बार्डर पर होता है।
छप्पर	:	श्रीविग्रह के सिंहासन के ऊपर पुष्पों से सज्जित फ्रेमों को झोपड़ी की भाँति व्यवस्थित करने की प्रक्रिया।
छः मास	:	बंगला कला में प्रयुक्त एक प्रकार का षडभुजाकार जाल।
जाल	:	फ्रेम की कीलों पर पुष्प की लड़ियों के द्वारा उन्हें सजाने की क्रिया जाल तैयार करना कहलाती है।

जाल तोड़ना : फ्रेम पर कसे हुए फूलों के जाल में से फूलों की डिजाइन बनाते हुए शेष फूल हटाने की प्रक्रिया।

जाल मोरपंखी : एक प्रकार का जाल जिसमें सज्जित लड़ियाँ नृत्य करते हुए मयूर की भांति दर्शित होती हैं। इस प्रकार के जाल प्राय: मार्का एवं हथिनी में बनाये जाते हैं।

झाड़ : लकड़ी के आयताकार फ्रेम अथवा गोलाई लिए हुए बाँस की खपच्ची को विविध पत्र प्रसूनों की लड़ी से सजाकर उन्हें मंदिर के प्रांगण में लटकाया जाता है। इस प्रकार फूलों से सज्जित फ्रेम झाड़ कहलाते हैं।

झुबिया : लगभग सात से आठ इंच की लम्बाई में तैयार होने वाली (लटकन) झुबिया जिसमें नीचे की ओर गुलाब तथा मध्य में गैंदा एवं रायबेल के पुष्प पिरोये जाते हैं। इसमें ऊपर की ओर कुछ धागा खाली छोड़ा जाता है जिससे छज्जे की कीलों पर इसे लटाकाया जा सके।

ठाठ : बंगला कला के अंतर्गत किसी एक फ्रेम अथवा फ्रेमों के समूह को ठाठ कहकर संबोधित किया जाता है।

ठाठ-बैठाना : फूल बंगला बनाने में एक प्रकार की प्रक्रिया जिसके अंतर्गत आधार तल के ऊपर विभिन्न फ्रेमों के द्वारा ऊपर की मंजिल खड़ी की जाती है।

ठाठ पेशानी : बंगला कला के अंतर्गत विशेष प्रकार के ठाठ जिनके ऊपर की ओर बार्डर (मत्था) बना रहता है, पेशानी वाले ठाठ कहलाते हैं। बगली तथा तिदरा शीर्षक फ्रेमों में परेशानी देखी जा सकती है।

डबल चौकी : बंगला कला में प्रयुक्त एक प्रकार जाल।

डाक पन्नी : सजावट हेतु प्रयुक्त पीतर पन्नी की तरह दिखने वाला कागज।

डोरी : बंगला कला में प्रयुक्त यह डोरी देखने में पुष्प लड़ी की भांति ही दर्शित होती है। फूल के अभाव में इसका प्रयोग यदाकदा किया जाता है, जो कपास को गूथकर तैयार की हुई प्रतीत होती है।

तिदरा	:	एक प्रकार का ठाठ जो तीन दरों (दरज्जौ) का भाव प्रदर्शित करता है।
दरवज्जा (दरवाजा)	:	बंगला कला में प्रयुक्त एक प्रकार का ठाठ जो प्रायः श्रीविग्रह के सामने एवं ऊपर की मंजिलों में प्रयुक्त होता है।
दोहरी लड़ी	:	बंगला बनाने में प्रयुक्त इकहरी लड़ी को जब एक अन्य लड़ी के साथ सजावट हेतु प्रयोग में लाया जाता है तो यह विधि दोहरी लड़ी का कार्य कहलाती है।
धागा लगाना	:	मढ़ाई के उपरान्त पूरे फ्रेम पर धागा लगाया जाता है ताकि पट्ठे बाहर की ओर न निकलें।
पट्ठे छीलना	:	केले के तने को काटने के उपरान्त छीलने की प्रक्रिया।
पिछवाई	:	फूल बंगला के दौरान श्रीविग्रह के पृष्ठ भाग में लगाया जाना वाला ठाठ पिछवाई कहलाता है।
पुष्प गुफा	:	फूलों की लड़ी को गोलाई में इस प्रकार लटकाना कि प्रत्येक गोलाई एक समान प्रदर्शित हो और इसका प्रदर्शन गुफा की भाँति दिखे।
फूल छत	:	विभिन्न फ्रेमों का संयोजन कर उन्हें फूलों की लड़ी के द्वारा सज्जित कर मंदिर के जगमोहन में फूल छत बनाई जाती है।
फूल पुवाई	:	बंगला बनाने से पूर्व फूलों को पिरोकर गुच्छी तैयार करने की प्रक्रिया।
फूल बैठक	:	सोलहवीं शताब्दी में फूल बंगला हेतु प्रचलित शब्द।
फूल भवन	:	सोलहवीं शताब्दी में फूल बंगला हेतु प्रचलित शब्द।
फूल महल	:	सोलहवीं शताब्दी में फूल बंगला हेतु प्रचलित शब्द।
बगली	:	एक प्रकार का ठाठ जो बंगला करते समय सिंहासन के समीप ही लगाया जाता है। इसका प्रयोग ऊपर की मंजिल में भी होती है।
बटुआ डालना	:	पुष्प की लड़ी को गोलाई में लटकाने की प्रक्रिया।

बिछैया : बंगला के आधार तल पर प्रयुक्त फ्रेम।

बिरंजी : एक प्रकार की छोटी कील जो ठाठ पर निश्चित दूरी के अनुपात में लगाई जाती है। इन कीलों के ऊपर ही फूलों के जाल कसे जाते हैं।

बुर्जी : बंगला कला के अंतर्गत छप्पर के विकल्प के रूप में प्रयुक्त एक प्रकार का ठाठ जो मंदिर के गुंबद अथवा किसी घाट अट्टालिका की छतरी की भांति दर्शित होता है।

मढ़ाई : केले के तने से छीलकर निकाले गये पट्ठों को फ्रेम की कीलों के ऊपर लगाने की प्रक्रिया जिसके ऊपर केले के तने की कटिंग से तैयार विभिन्न फूल पत्तियाँ सजायी जाती हैं।

मार्का : त्रिभुज जैसी आकृति का एक प्रकार का फ्रेम जो फूल बंगला में ऊपर की ओर लगाया जाता है।

रायबेल : बेला से परिभाषित एक प्रकार का पुष्प जिसे स्थानीय लोग रायबेल भी कहते हैं। फूल बंगलों में अधिकांश इसी पुष्प का प्रयोग होता है।

वृन्दावनी : बंगला कला में प्रयुक्त एक प्रकार का जाल। (देखें विविध प्रकार के जालों के चित्र)

सूखा काम : बदले परिवेश में प्राकृतिक स्रोतों से पृथक डोरी, फोम, थर्मोकोल एवं रंगीन कागज आदि से बंगला तैयार करना।

हथिनी : बंगला में दोनों किनारों पर लगने वाला एक प्रकार का समकोणनुमा फ्रेम जो धरातल पर खड़ा करने पर हाथी की सूँड़ की तरह दिखता है।

शब्दानुक्रमणिका

अठमास २,७,१८,४५
इकहरी लड़ी १८
कुसुम कुंज ७
गुच्छी १५,१९
गुलाब १६,१८
गोलचा २
गौख २,१०,१४
गैंदा १६,१९
चस २,१७
छप्पर ५
छः मास २,७,१८,४५
जाल १८
जाल तोड़ना ५,८,१८
जाल मोरपंखी १८
झाड़ १०,१४,१५,१६,१७
झुबिया ७,१२,१७,१९,२०
ठाठ १,५,६,९,१०,११,१२,
१४,१५,२१,४३
डबल चौकी १८
डाक पन्नी २०
डोरी २२
तिदरा २,१०,१२,१५,१७
थमाकोल २३,४३
दरवज्जा २,५,७,१०,११
दोहरी लड़ी १८
पट्ठे छीलना ८,१७,२३
पिछवाई २,५,१०,११
पुष्प गुफा १६,१७
फूल छत १६,१७
फूल पुवाई १९
फूल बैठक ७
फूल महल ७
फोम २३,४३
बगली १,५,१०,११,१५,१७
बंगला १,२,३,४,५,६,७,८,
९,१०,११,१२,१३,
१४,१५,१६,१७,१८,
१९,२०,२१,२२,२३,
३८,४३,४४,४५,
४६,४७
बटुआ १७
बिछैया १,१३,१७,४४,४७
बिरंजी ८,११
बुर्जी २,५,१०,१३
मढ़ाई २,१७
मार्का २,५,१०,१२,१८
मोगरा १६
रायबेल १५,१६,१९
वृन्दावनी २,७,१८,४५
सूखा काम २२,४३
हथिनी २,५,१०,११,१५,१८

वृन्दावन शोध संस्थान के प्रकाशन

Catalogues

A Catalogue of Sanskrit Manuscripts (Part I- Rs.95.00, Part II-Rs. 110.00)
(Part III-Rs.125.00, Part IV-Rs.175.00, Part V-Rs. 225.00, Part VI-Rs. 800.00)
A Catalogue of Hindi Manuscripts (Part I-Rs.65.00, Part II-Rs.180.00)
A Catalogue of Bangali Manuscripts (Part I-Rs. 150.00)
A Catalogue of Manuscripts Microfilmed (Part I-Rs.85.00)
A Desciptive Catalogue of Punjabi Manuscripts (Part I-Rs. 175.00)

शोधपरक पुस्तकें

ब्रज की रासलीला : लेखक डॉ. प्रभुदयाल मीतल	रु. 500.00
दशश्लाकी (सटीक) : सम्पादक- डॉ. कमलेश पारीक	रु. 30.00
केवलराम कृत रासमान के पद : सम्पादक - प्रो. एलन ऐंट्विसिल	रु. 30.00
स्वामी चरणदास कृत रहस्यदर्पण एवं रहस्यचन्द्रिका सम्पादक- डॉ. रामदास गुप्त और डॉ. शरणबिहारी गोस्वामी	रु. 45.00 पेपर बैक, रु. 60.00 सजिल्द
रसिक कर्णाभरण (लीला) : सम्पादक - डॉ0 नरेशचन्द बंसल	रु. 40.00 पेपर बैक, रु. 60.00 सजिल्द
स्मरण दर्पण : सम्पादक - गोपालचन्द्र घोष	रु. 25.00 पेपर बैक, रु. 35.00 सजिल्द
यमुना एवं यमुनाष्टक : सम्पादक- वृन्दावन बिहारी गोस्वामी	रु. 110.00 पेपर बैक, रु. 125.00 सजिल्द
छन्द: कौस्तुभ : सम्पादक - डॉ0 कमलेश पारीक	रु. 175.00 पेपर बैक, रु. 250.00 सजिल्द
मथुरा महात्म्य : सम्पादक - डॉ. उमा भास्कर	रु. 100.00 पेपर बैक, रु. 150.00 सजिल्द
श्री गोपाल पाठावली : सम्पादक - चन्द्रधर त्रिपाठी और गोपालचन्द्र घोष	रु. 40.00 पेपर बैक, रु. 100.00 सजिल्द
ब्रज की लोक कथाएँ : डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी 'दीपक'	रु. 80.00 पेपर बैक, रु. 90.00 सजिल्द
श्रृंगार सरसी : अनु./सम्पादक- डॉ. कमलेश पारीक	रु. 300.00

Rasman ke Pad (Keval Ram) Edit. by Prof. Alan Entiwistle Rs. 45.00 (English Version)
Vrindavan in Vaishnava Literature by Dr. M. Corocoran Rs. 375.00
An Early Testamentary Documents in Sanskrit
by Tarapada Mukerjee & Prof. J.C. Wright Paper back Rs. 10.00
Recent Advences of Conservation Of Manuscripts: Ed. Prof. Govind Sharma Rs. 100.00
Vaishnava Tilakas by : Prof. Alan Entiwistle Rs. 150.00
Ed: R.D. Paliwal, Dr. B.B. Chaturvedi

चन्द्रकला: सम्पादक- डॉ. नरेशचन्द बंसल	रु. 350.00
राधिका पाठावली : सम्पादक- गोपालचन्द्र घोष	रु. 100.00
गोधूलिबेला : डॉ. रामदास गुप्त का काव्य संकलन	रु. 250.00
गीत-गन्धा : डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी 'दीपक' का गीत संकलन	रु. 100.00
नृसिंह पाठावली : श्री गोपालचन्द्र धोष	रु. 300.00
गीत ब्रज वसुन्धरा के : डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ	रु. 250.00
श्रीमद्भागवत दिव्यदर्शन: डॉ. रजनी भटनागर	रु. 80.00
भारत भाव रूप श्रीकृष्ण : संपादक - भवानीशंकर शुक्ल	रु. 500.00
स्वस्ति संकल्प : संपादक - भवानीशंकर शुक्ल	रु. 500.00
आधुनिक कविता में राधाकृष्ण- डॉ. ओंकार त्रिपाठी	रु. 500.00
श्रीरंग मंदिर वृन्दावन का श्रीब्रह्मोत्सव-डॉ॰ महेश नारायण शर्मा	रु. 250.00 पेपर बैक,
डॉ॰ राजेश कुमार शर्मा	रु. 275.00 सजिल्द,
चित्रित पोस्टकार्ड	रु. 60.00

○ छाया : उमाशंकर पुरोहित